अजीज बर्नी की पुस्तक

"आरएसएस की साजिश–26/11"

सच या झूठ का पुलिंदा

भारत नीति प्रतिष्ठान
India Policy Foundation

डी–51, प्रथम तल, हौजखास, नई दिल्ली–110016
दूरभाषः 011–26524018 फैक्सः 011–46089365
ईमेलः indiapolicy@gmail.com

CONTEMPORARY CONCERN

26/11 (मुंबई आतंकी हमले) पर विवादित पुस्तक Þvkj,l,l dh lkft'k&26@11ß का विश्लेषण और मुख्य अंशः

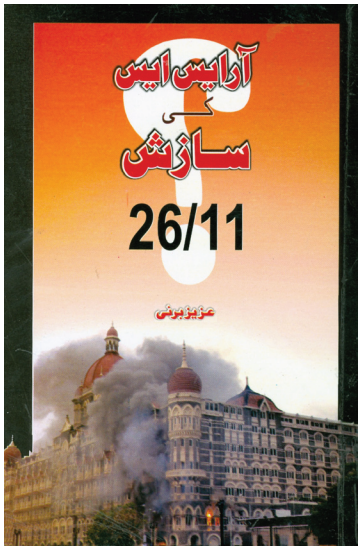

iLrd dk uke	%	आरएसएस की साजिश – 26/11
idk'ku o"k	:	दिसंबर 2010
eY;	:	200 रुपये (भारत में) 300 रुपये (बांग्लादेश/पाकिस्तान) 20 डॉलर (संयुक्त राज्य अमेरिका) 10 पाउंड (ब्रिटेन) 50 रियाल (सऊदी अरब)
dqy i"B	:	788
dqy v/;k;	:	126
dqy fiV vkMj प्रथम संस्करण–उर्दू	:	25,000 ¼iPphl gtkj½
idk'kd	:	बर्नी पब्लिशिंग हाउस डी–189, सेक्टर– 55, नोएडा –201301 (उ. प्र.)
njHkk"k	:	0120–4544812
oSclkbV	:	www.azizburney.com

भूमिका

मुंबई पर हुए आतंकी हमले यानी 26/11 की घटना ने भारतीय राज्य समाज का ही नहीं, अंतर्राष्ट्रीय जगत का भी आतंकवाद के बढ़ते हुए प्रकोप और इसकी बदलती हुई प्रकृति की ओर ध्यान आकर्षित किया। घटना में बड़ी संख्या में सक्षम और बहादुर पुलिस अधिकारी, कमांडो और नागरिक शहीद हुए। घटना को अंजाम देने वाला एक आतंकवादी अजमल कसाब घटना स्थल पर जीवित पकड़ा भी गया। इसके अकल्पनीय स्वरूप को देखते हुए विश्व के अनेक देशों की जांच एजेंसियों ने जांच में स्वतः पहल पर भागीदारी दिखाई। कई अवसरों पर उनके बीच सूचनाओं का आदान–प्रदान भी हुआ। 26/11 में पाकिस्तान की भागीदारी सिर्फ धारणा या संदेह का विषय नहीं बल्कि सभी स्तरों पर हुई जांच में यह निर्विवादित रूप से सिद्ध भी हुआ है।

26/11 ने आतंकवाद के प्रति राज्य की नीति, मीडिया के दृष्टिकोण और आंतरिक सुरक्षा के सभी स्तरों पर गंभीर चिंतन और बहस को जन्म दिया। मीडिया ने एक स्वर से राज्य को आतंकवाद पर 'Hard State' की तरह पेश आने के लिए एक बड़ा जनमत तैयार करने का काम किया है।*

इस घटना के दो वर्षों के बाद देश के एक प्रमुख उर्दू समाचारपत्र के संपादक अजीज बर्नी ने "आरएसएस की साजिश–26/11" नामक पुस्तक उर्दू में लिखी, जिसका विमोचन नई दिल्ली में कई प्रमुख हस्तियों, जिनमें कांग्रेस के महासचिव श्री दिग्विजय सिंह भी शामिल थे, की उपस्थिति में किया गया। इस पुस्तक ने 26/11 की घटना के लिए दोषी कसाब और उसके आतंकवादी साथियों एवं पाकिस्तान को दोष मुक्त कर भारत की जांच एजेंसियों, हिंदूओं, हिंदू संगठनों, अमेरिकी और इजराइली जासूसी संस्थाओं क्रमशः सीआईए और मोसाद को दोषी बताया है। तथ्यों की जांच परख और विश्लेषण से पता चलता है कि यह पुस्तक निम्न दर्जे के षड्यंत्र सिद्धांत पर आधारित है। अलकायदा एवं अन्य जेहादी संगठनों के प्रवक्ता और सिद्धांतकार भी अमेरिका की 9/11 की घटना को षड्यंत्र सिद्धांत के तहत सीआईए का ही कारनामा मानते हैं। लेकिन ऐसा करने वाला कोई व्यक्ति अमेरिका या यूरोप का नागरिक नहीं है। भारत की स्थिति भिन्न है। यहां इस सिद्धांत का अनुकरण बेवाक एवं निर्भयता के साथ किया जा रहा है। इससे एक प्रश्न खड़ा होता है कि क्या बर्नी की पुस्तक पाकिस्तान, तालिबान एवं जेहादी संगठनों की मदद करने के लिए लिखी गई है।

पुस्तक के नाम से ऐसा जाहिर होता है कि लेखक ने कुछ ऐसे तथ्यों का रहस्योद्घाटन किया है जो जांच एजेंसियों, न्यायालय, पुलिस एवं गृह मंत्रालय एवं मुख्यधारा की मीडिया के हाथ नहीं लग पाया हो। पुस्तक पढ़कर निराशा और आश्चर्य दोनों होता है। इस पुस्तक की विषयवस्तु को जानना राज्य एवं समाज दोनों के हित में है, क्योंकि पुस्तक आंतरिक सुरक्षा, आतंकवाद, जांच प्रक्रिया एवं सुरक्षा एजेंसियों इत्यादि पर एक बड़ा प्रश्न खड़ा करती है। उर्दू में छपी 788 पृष्ठों की पुस्तक का भारत नीति प्रतिष्ठान ने तथ्यात्मक विवेचन किया। पुस्तक पढ़ने के बाद इसका प्रतिवाद करने के लिए अलग से कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। पुस्तक में लिखी गई बातें ही अपना प्रतिवाद स्वयं करती हैं। पूरी पुस्तक में तथ्यों की बजाय कल्पना के आधार पर मनगढ़ंत बातें की गई हैं। ये वही बाते हैं जिन्हें 26/11 की घटना के बाद कुछ उर्दू अखबारों द्वारा लिखा जा रहा था। पूरी पुस्तक षड्यंत्र सिद्धांत पर आधारित है। इसमें एक भी ऐसी बात नहीं कही गई है जिससे घटना पर हुई जांच पर अंगुली उठाई जा सके एवं कसाब और पाकिस्तान को दोष मुक्त माना जा सके। इसमें पुराने लेखों को संग्रह कर सनसनीखेज शीर्षक के साथ मनगढ़ंत बातों को परोसा गया है। क्या कोई व्यक्ति मनगढ़ंत बातों एवं पूर्वाग्रहों

*"आतंकवाद और भारतीय मीडिया" भारत नीति प्रतिष्ठान प्रकाशन, 2009

के आधार पर राज्य एवं उसकी संस्थाओं और नागरिक समाज पर प्रश्न खड़ा कर सकता है? क्या इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता माना जाए? या फिर अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत की खंडित छवि और समाज में वैमनस्य, अविश्वास, भ्रम, अफवाह फैलाने की सुनियोजित कोशिश मानी जाए। पुस्तक में सेना, राज्य की जांच एजेंसियों, पुलिस, न्यायालय की वैधानिकता पर गंभीर सवाल खड़ा किया गया है जिस पर न्यायालय, नागरिक समाज और बुद्धिजीवियों को हस्तक्षेप करने की आवश्यकता है।

आंतरिक सुरक्षा का प्रश्न राजनीति एवं परस्पर मतभेदों के दायरे से ऊपर होना चाहिए। अमेरिका में 9/11 के बाद कितनी सतर्कता बरती गई लेकिन राज्य एवं नागरिक समाज दोनों ने ही इसमें ओछी राजनीति, सामाजिक मतभेदों को सामने नहीं आने दिया। फ्रांस में तो जेहादी आतंकवाद के खतरे को देखते हुए मुस्लिम महिलाओं द्वारा बुर्का के उपयोग को भी प्रतिबंधित कर दिया गया। यूरोप के तमाम देशों में आंतरिक सुरक्षा की अहमियत एवं आतंकी हमले की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए नीतिगत एवं राजनीतिक स्तरों पर कई ठोस कदम उठाए जा रहे हैं, परंतु भारत में आंतरिक सुरक्षा को भी राजनीतिक स्वार्थों के आइने में देखा जा रहा है। उसी का परिणाम है कि बर्नी जैसे लोगों को संगठित एवं सार्वजनिक रूप में दुष्प्रचार करने एवं आंतरिक सुरक्षा के प्रश्न पर भ्रम एवं अफवाह फैलाने का अवसर मिल रहा है। क्या यह पुस्तक पाकिस्तान के पक्ष को मजबूत नहीं कर रही है?

बर्नी की पृष्ठभूमि कितनी विवादित रही है, इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि भारत के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के अमेरिका यात्रा के दौरान 90 पत्रकार उनके साथ गए थे, जिसमे बर्नी को मनमोहन–ओबामा के 24 नवंबर, 2009 के प्रेस मीट में जाने से अमेरिकी प्रशासन द्वारा अंतिम समय में रोका गया था।

अतः Contemporary Concern Series के अंतर्गत अजीज बर्नी की पुस्तक "आरएसएस की साजिश–26/11" के मुख्य अंशों का अनुवाद और उसमें कही गई प्रमुख बातों का संकलन प्रस्तुत किया गया है। यहां तथ्यों को यथावत रखा गया है। पुस्तक को किस अहमियत से प्रकाशित किया गया है इसे इस बात से समझा जा सकता है कि उर्दू में प्रकाशित इस पुस्तक की एक मुश्त 25,000 प्रतियां छापी गई हैं। इसके पहले इसी प्रकार की एक पुस्तक 'हू किल्ड हेमंत करकरे' (लेखक एसएम मुशरिफ) सन 2009 में प्रकाशित हुई थी। इसमें भी भारत की जांच एजेंसियों और राज्य की संस्थाओं की बुनियाद पर प्रश्न उठाते हुए कसाब एवं उसके आतंकवादी गुट को दोष मुक्त किया गया था।

बर्नी की पुस्तक पर न्यायालय में केस दर्ज है। परंतु गंभीर विश्लेषण एवं प्रतिवाद नहीं होने के कारण इस प्रकार की प्रवृति पुष्ट होती जा रही है। इसके साथ ही "Who killed Karkare?" पुस्तक के भी मुख्य बिंदू यथावत रखे गए हैं। आशा है यह हस्तक्षेप आतंकवाद के प्रति हमारी दृष्टि एवं नीतियों को बनाने में मदद करेगा।

और अंत में, इस पुस्तक को तैयार करने में विशेष योगदान के लिए श्री मनमोहन शर्मा, अनिल पांडे, सैयद असदर अली, शिव कुमार के साथ पुस्तक की साज–सज्जा के लिए मो. फैज़ान अशरफ और योगेश कुमार को प्रतिष्ठान धन्यवाद ज्ञापित करता है।

&ik- jkd'k flUgk

मानद निदेशक, भारत नीति प्रतिष्ठान

vkj,l,l dh lkft'k&26@11

विषय सूची

1. 26/11 किसकी साजिश– क्या उठेगा पर्दा?
2. हेमंत करकरे के बाद एटीएस?
3. मालेगांव बम धमाके की तफ्तीश और मुंबई दहशतगर्दाना हमलों का कोई ताल्लुक है, इस हकीकत का पता लगाना जरूरी है।
4. करकरे के बाद भी बेनकाब हो पाएंगे सफेदपोश दहशतगर्द?
5. पांच विभिन्न स्थानों पर साठ घंटे तक तबाही और सिर्फ दस दहशतगर्द, बात कुछ हजम नहीं हुई।
6. शहीदों के अजीज इंसाफ मांग रहे हैं। वे समझते हैं कि जो दिख रहा है, इसके पर्दे में हकीकत कुछ और भी है।
7. मुंबई पर दहशतगर्दाना हमले का रद्देअम्ल करकरे की जांच और रद्देअम्ल करकरे की मौत।
8. किसी भी फैसले से पहले हमारी सरकार यह तो सोचे काबिज यकीन कौन? दहशतगर्द कसाब या शहीद करकरे।
9. प्रज्ञा और पुरोहित नए नही हैं – दहशतगर्दी 1947 से ही आरएसएस का कल्चर रही है।
10. 1993 के अलावा सभी दहशतगर्दाना हमले संघ व मोसाद की साजिश का नतीजा है। करकरे इस सच्चाई को सामने ला रहे थे।
11. कौन है मास्टर माइंड इन दहशतगर्द हमलों का? क्या सोचते हैं आप, गौर करें और बताएं?
12. अगर पुलिस को दिया गया कसाब का बयान सच्चा तो फिर प्रज्ञा, पुरोहित और पांडेय के बयान भी सच्चे।
13. कसाब नाव से उतरा और कीचड़ से गुजरा, स्टेशन पहुंचा लेकिन कीचड़ जूतों पर और न भीगने के निशान पैंट पर।
14. मुंबई पर हमला करने वाले दहशतगर्द पाकिस्तानी मगर क्या इनका कोई साथी हिन्दुस्तानी भी।
15. शहादत तो शहादत है इस पर सवाल कैसा, मगर हकीकत का सामने आना भी मुल्क के मोफाद में है।
16. जंग पाकिस्तानी से जरूरी है या दहशतगर्दी से।
17. क्या सब को मुतमीन कर पाएगा अंतुले के बयान पर वजीर दाखिला की वजाहत (स्पष्टीकरण)।
18. महाराष्ट्र एटीएस के प्रमुख के.पी. रघुवंशी क्या हेमंत करकरे के असल जानसीन (उत्तराधिकारी) हैं।
19. अमेरिका से आने वाली रिपोर्टों ने कहा कि 9/11 के पीछे सीआईए और मोसाद, क्या 26/11 के पीछे भी?
20. हम आह भी करते हैं तो हो जाते हैं बदनाम– वे कत्ल भी करते हैं तो चर्चा नहीं होता।
21. मुल्क में अमनो इतहाद का यकीन हो जाए तो दूं साल–ए–नव की मुबारकबाद।
22. जो दिल पर लिखा है मैने।
23. मौत की धमकी और करकरे की मुस्कान।
24. हिंदू दहशतगर्दी को बेनकाब करने वाला जांबाज पुलिस ऑफिसर हेमंत करकरे।
25. शहीद इनकाउंटर स्पेशिलस्ट विजय शालेश्कर।
26. साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर।
27. प्रसाद श्रीकांत पुरोहित।
28. कसाब का मुक्कमल इकबालिया बयान।
29. मुंबई दहशतगर्दाना हमलों की तफ्शीली तहकीकात जरूरी।
30. अजमल कसाब को नेपाल से गिरफ्तार किया गया।
31. नरिमन हाउस हमलों की हकीकत।
32. नरिमन हाउस में जब शालसी नाकाम रह गए।
33. मुंबई दहशतगर्दाना हमलों में मोसाद का हाथ (अमरेश मिश्रा)।
34. सीआईए में रविंद्र सिंह की तकररी कुछ तो राज पिना हैं।
35. हिंदुस्तानी खुफिया एजेंसियों की नअहली और इसके इसबाब।
36. मुंबई में दहशतगर्दी और मालेगांव की हिंदू दहशतगर्दी के दरम्यान ताल्लुक।
37. मुंबई धमाकों से मुतल्लिक चंद हकाईक (ज्ञानी शंकरन)।
38. मुंबई दहशतगर्दाना हमले की हकाईक।
39. मालेगांव बम धमाका – एटीएस की जांच पर एक नजर।
40. मालेगांव धमाकों में संघ और इंडियन आर्मी का हाथ। लेफ्टिनेंट कर्नल श्रीकांत पुरोहित से बहुत से राज खुले।
41. हिंदू इंतहा पसंद मुल्क को हिंदू राष्ट्र बनाने के लिए सरगर्म।
42. हिंदूत्व का दहशतगर्दी से ताल्लुक।
43. मेरा जी चाहता था कि खुदकुशी कर लूं।
44. आरएसएस के सरकर्दा लीडरों को मारने की साजिश।
45. दहशतगर्द भटका हुआ सामाजी कारकुन होता है।
46. हिंदू संगठन और उनकी विस्तृत जानकारी।
47. नांदेड – आरएसएस लीडर का घर या बम फैक्टरी।
48. बजरंग दल और अक्लियत, मुखालिफ सरगर्मियां (अल्पसंख्यक विरोधी गतिविधियां)
49. अक्लियत विरोधी दहशतगर्दी और जदीद हथियार।
50. चंद हिंदू संगठन भी बम धमाकों में शामिल।
51. साजिशी फंदा।
52. हेमंत करकरे और मुंबई पुलिस के दीगर ऑफिसरों की मौत से मुत्तलिक हालात पर पार्लियामेंट में वजीर दाखिला के दिए गए बयान के कुछ हिस्से।
53. हकाईक पर पर्दापोशी क्यों?
54. करकरे के बाद भी बेनकाब हो पाएंगे सफेदपोश दहशतगर्द।

55. दहशतगर्दी मुखालिफ सियासी कांफ्रेंस।
56. आडवाणी जी? मुकामी हाथ फहीम अंसारी का या मिस्टर इंद्रेश का?
57. फिर इंडियन मुजाहिद्दीन कहां गई अभिनव भारत?
58. 9/11, 26/11, 3/3, दाराअलूम देवबंद, जमियते उलेमा हिंद।
59. हिंद पाक में दहशतगर्दाना हमले किसकी साजिश?
60. क्या एलेक्शन के दौरान फिर होगा 26/11?
61. वोट दें ताकि शहीद हेमंत करकरे के असल कातिल बेनकाब हों।
62. मैं हूं अजमल आमिर कसाब।
63. अब फिर वंदे मातरम और लिब्राहन कमीशन।
64. लो कसाब तो मुकर गया।
65. कसाब की जबान पर हेडली का नाम।
66. 26/11 को मुंबई पुलिस का किरदार एक और सवाल।
67. वे चाहते हैं मेरे लिए सजा–ए– मौत।
68. एक सवाल पॉजिटिव और निगेटिव थिंकींग का है।
69. यह मजमून मेरा नहीं मगर।
70. अगर है कोई जवाब तो बताओ।
71. आजाद भारत का इतिहास।
72. जो हमने लिखा वही पश्चिम बंगाल के पूर्व डीजीपी ने भी।
73. क्या चुप रहते अगर यह आपका बेटा होता?
74. अब सिलसिला साजिश से पर्दा उठाने का।
75. अलविदा 2009!
76. कौन है असल दहशतगर्द क्या मैं पूछ सकता हूँ?
77. आखिर हेडली का बम धमाकों से क्या रिश्ता है?
78. कही देर न हो जाए!
79. हमारा मुल्क खतरे में है और हमें खबर नहीं।
80. अमेरिकी अदालत में दाखिल चार्जशीट कितनी सच्ची?
81. लो उठ गया सवाल सीआईए पर पार्लियामेंट में।
82. हेडली के खिलाफ एफबीआई की चार्जशीट।
83. चार्जशीट दो।
84. क्या अब भी कहोगे सिर्फ दस दहशतगर्द?
85. इस वक्त के हालात और वाक्यात भी कुछ कहते हैं। सुनिए तो
86. पूणे धमाके तवज्जा (ध्यान) हटाने की साजिश?
87. अच्छा तो ये हमारे मुल्क के दुश्मन नहीं परिंदों के दोस्त हैं।
88. अगर ये हिंदुस्तान में 9/11 का प्लान कर रहे हैं।
89. पूणे बम धमाके भी क्या मालेगांव।
90. दहशतगर्द की शिनाख्त क्या नाम से या काम से।
91. दहशतगर्द हेडली किसका एजेंट?
92. अमेरिका नहीं चाहता कि सच सामने आए, क्यों?
93. हुकूमत हिंद को नाराजगी जाहिर करनी चाहिए।
94. तकरीर वजीरे आजम की तहरीर वीर सिंघवी की।
95. जो लहजा पाकिस्तान के लिए था क्या वह अब अमेरिका के लिए होगा?
96. इंसाफ के बगैर जम्हूरियत का तशब्बर ही क्या?
97. आप ने सोचा है टेरर ट्रेड के बारे में।
98. 26/11 का सच जानना है तो।
99. दहशतगर्दी सामाजिक इंसाफ के लिए नामुमकिन।
100. अमेरिका चाहता है अब हेडली पर नहीं दाउद पर बात हो।
101. दहशतगर्दों को इनके मजहम से नहीं इनकी अम्ल से पहचानो।
102. धमाका, पटाखा, बारूद और 27 हलाक।
103. प्रज्ञा ठाकुर से ज्यादा खतरनाक है फौजी अफसरों की भूमिका।
104. अब खुले सभी बम धमाकों की फाइलें और हो नए सिरे से जांच।
105. कानपुर पुलिस बताए कि राजीव नगर बम धमाकों की हकीकत क्या है?
106. इंडियन मुजाहिद्दीन बजरंग दल का ही कोड नाम है।
107. अब बताओ असम बम धमाकों का असली मुजरिम कौन?
108. साजिश बहुत गहरी है फिरकापरस्तों की।
109. मुकदमें की यह आग हम तक भी पहुंचेगी उम्मीद न थी।
110. सारे मुसलमान दहशतगर्द नहीं पर सारे दहशतगर्द मुसलमान हैं, क्या अब भी यही कहेंगे आडवाणी जी?
111. संघ परिवार की देन है वतन दुश्मन अनाशर।
112. पुरोहित ने माना वही मास्टर माइंड, पर क्या सिर्फ मालेगांव बम धमाके का या इंडियन मुजाहिद्दीन का भी।
113. हैदराबाद बम धमाकों की नए सिरे से जांच होगी, कई पर्देफाश।
114. साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर का मुकदमा लड़ेंगे बाल ठाकरे।
115. संघ परिवार के इशारे पर पाठ्यपुस्तकों में जहर।
116. संघ परिवार का नया सिगूफा। दिल्ली का कुतुबमीनार कुतुबुद्दीन ऐबक नहीं राजा समुद्र गुप्त ने बनवाया था।
117. आरएसएस ने लिखवाया है स्कूलों की किताबों में–हिटलर हमारा लीडर है और हम इससे मोहब्बत करते हैं।
118. तालिम को दिया फिरकादाराना रंग।
119. संघ परिवार मासूम जहीनों में भर रहा है जहर।
120. संघ परिवार का बढ़ रहा अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्क।
121. आरएसएस के सरसंघचालक सुदर्शन का मानना है हिंदुस्तान है हिंदू राष्ट्र।
122. देखा कितना मुंतजिम और मजबूत है संघ परिवार।
123. राजनाथ और आडवाणी दहशतगर्दों के बचाव में।
124. सोचें अगर इंद्रेश और मोहन भागवत के कत्लेआम की साजिश कामयाब हो जाती तो मुसलमानों का कितना कत्लेआम होता।
125. धमाकों से तीन दिन पहले ही आरोपियों को पकड़ा गया।
126. तुम तो कहते थे हमें कि हम हैं गद्दारे वतन – हमने आईना दिखाया तो बुरा मान गए।

पुस्तक के मुख्य बिंदू

1. मुंबई–26/11 के हमले के लिए भाजपा और संघ जिम्मेदार, जांच में देरी के खिलाफ भाजपा ने नहीं उठाई आवाज। (पृ: 11)
2. एटीएस प्रमुख हेमंत करकरे मालेगांव के धमाके के बारे में कई रहस्योदघाटन करने वाले थे जिससे कई साधू–संतों सहित भाजपा और आरएसएस के चेहरे बेनकाब हो जाते। (पृ: 28)
3. संघ परिवार के हमले की साजिश में मोसाद और सीआइए ने मदद की। अमेरिका की शह पर सउदी अरब के मौलाना बेदी ने 26/11 के जेहादियों को इकट्ठा किया था। गुजरात के मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी ने हमलावर को मुंबई पहुंचाने और होटल में रूकवाने में मदद की (पृ: 41)
4. 1993 के बाद देश में हुए सभी धमाके आरएसएस और मोसाद के गठजोड़ का नतीजा है। हेमंत करकरे इसका खुलासा मीडिया के सामने करने वाले थे और इसके बाद वे देश छोड़कर कहीं और बस जाने वाले थे। करकरे को एके–47 से नहीं पुलिस के सर्विस रिवाल्वर से मारा गया। रॉ और गृहमंत्रालय करकरे के कत्ल के मामले में गुजरात एटीएस की भूमिका की छानबीन कर रहा है। करकरे को हिंदुत्व समर्थक अधिकारियों और छोटा राजन गिरोह के लोगों ने मारा। (पृ: 61)
5. कांग्रेस ने मालेगांव धमाके में बजरंग दल और आरएसएस के साथ बीजेपी का भी हाथ होने का संदेह व्यक्त किया। बीजेपी ने साध्वी प्रज्ञा सिंह को कानूनी सहायता देने का फैसला किया जिस दिन पुरोहित ने सीबीआई को बयान में बताया कि वीएचपी के नेताओं ने अभिनव भारत संगठन बनाने में विशेष सहयोग दिया और आरएसएस के लीडर इंद्रेश कुमार ने पाकिस्तान के गुप्तचर संगठन आईएसआई से तीन करोड़ रुपये लिए थे। उसी दिन करकरे की हत्या की धमकी का फोन आया और अगले दिन करकरे की हत्या हो गई। (पृ: 99)
6. आरएसएस और इजराइल भारत को अस्थिर करना चाहते हैं। (पृ: 190)
7. हिंदू राष्ट्र बनाने के लिए देश भर में किए जा रहे हैं धमाके। (पृ:219)
8. अभिनव भारत को मिलती थी विश्व हिंदू परिषद से आर्थिक मदद। प्रवीण तोगड़िया के पैसे से इंद्रेश कुमार को मारने के लिए हथियार खरीदा गया। (पृ: 232)
9. आरएसएस नौजवानों और औरतों को त्रिशूल बांट रहा है, तो बजरंग दल लोगों को बम बनाने और धमाके करने की ट्रेनिंग दे रहा है। वीएचपी ने महाराष्ट्र के कई मस्जिदों में बम फिट कर धमाके किए। (पृ: 584)
10. इंडियन मुजाहिद्दीन और इस्लामिक सिक्योरिटी फोर्स जैसे आतंकवादी संगठनों को तैयार कर संघ और वीएचपी मुसलमानों को बदनाम करने की साजिश रची है। असम में बम धमाकों के पीछे इंडियन मुजाहिद्दीन का हाथ नहीं, दरअसल यह काल्पनिक संगठन है। बजरंग दल एक संदिग्ध संगठन है और इंडियन मुजाहिद्दीन, बजरंग दल का ही कोड नाम है। कम्यूनल्जिम कम्बैट (संपादक तीस्ता सेतलवाड) के रिपोर्ट को उद्धृत कर कहा गया कि सीबीआई ने 'हिंदू आतंकवाद' पर पर्दा डालने की कोशिश की है और बाटला हाउस मुठभेड़ फर्जी था। (पृ: 597)
11. भाजपा के चुनाव में भाग लेने पर पाबंदी लगाने पर चुनाव आयोग को विचार करना चाहिए। नाथूराम गोडसे से लेकर साध्वी प्रज्ञा तक हिंसा आरएसएस कल्चर का हिस्सा रहा है। आरएसएस से जुड़े 100 संगठन हिंसा की गतिविधियों में भाग ले रहे हैं। देश की पुलिस व सेना की मानसिकता मुस्लिम विरोधी है। (पृ: 606)

KEY POINTS IN THE BOOK

1. The BJP and the RSS are responsible for 26/11 attack in Mumbai. The BJP did not raise its voice against the delay in probe. (p11)

2. ATS chief Hemant Karkare was about to disclose many facts regarding Malegaon blast in which he was expected to expose many sadhu and saints including the BJP and the RSS. (p 28)

3. MOSAD and CIA had assisted the Sangh Pariwar in the attack carried out in Mumbai. With the tacit understanding of the USA, Saudi Arabia's Maulana Bedi had collected fundamentalists. Even Gujarat chief minister Narendra Modi had helped in attackers' arrival and stay. (pp41)

4. Post 1993, all the attacks in the country is the result of the nexus between the RSS and MOSAD. Karkare was about to make all these disclosures to the media and was going to leave the country to settle abroad. Karkare was not killed by AK-47 but by the service revolver of the police. RAW and Home Ministry are investigating the role played by the Gujarat ATS in Karkare's murder case. Karkare was killed by Hindutva-minded police official and people from the Chota Rajan gang. (p61)

5. The Congress is suspecting the involvement of the BJP in the Malegoan blast other than the RSS and Bajrang Dal. The BJP decided to give legal assistance to Sadhvi Pragya, the day Purohit told the CBI that the VHP leaders had given special contribution in formation of Abhinav Bharat. RSS leader Indresh Kumar has taken Rs 3 crore from the Pakistan intelligence agency ISI. The same day Karkare received the threat call and the very next day he was killed. (p99)

6. The RSS and Israel are trying to make India unstable. (p190)

7. In order to make India a Hindu nation, such blasts are being carried out. (p219)

8. Abhinav Bharat was getting financial aid from the Vishwa Hindu Parishad. Weapons were bought from the money provided by Praveen Togadia to kill Indresh Kumar. (p232)

9. While the RSS is distributing 'Trishul" to youths and women, the Bajrang Dal is providing training to people for making bombs and causing blasts. The VHP had planted bombs in several mosques in Maharashtra to explode them. (p584)

10. The RSS and VHP are trying to defame Muslims by forming terrorist organizations like Indian Mujahideen and Islamic Security Force. Indian Mujahideen was not involved in the bomb blasts in Assam. Bajarang Dal is a dubious organization and Indian Mujahideen is the code name of it. Editor of Communalism Combat Teesta Seetalwad mentioned in a report that the CBI is trying cover up Hindu Terrorism and Batla encounter was fake.(p597)

11. Election Commission of India must consider banning the BJP to contest elections. From Nathuram Godse to Sadhvi Pragya, violence is part of the RSS culture. About 100 Hindutva Organisations associated with the RSS are involved in the violent activities. Mentality of the police and the army in the country is anti-Muslim.(p606)

२६ नवंबर किसकी साजिश

हिंदुस्तान पर हुए सबसे बड़े दहशतगर्दाना हमले की यह दूसरी बरसी है। हिंदुस्तान भर की आवाम 26 नवंबर, 2008 को हमारी देश की आर्थिक राजधानी मुंबई पर हुए आतंकवादी हमले को नहीं भूली होगी। लेकिन गत दिनों जिस तरह से हिंदुस्तान में हुए दीगर बम धमाकों की तफ्तीश की खबरें सुर्खियां बनती रहीं और इनकी रद्दोअम्ल (प्रतिक्रिया) में सियासी और गैरसियासी तंजीमें मुजाहिरे करती रहीं, 26 नवंबर को मुंबई पर हुए दहशतगर्दाना हमले का जिक्र इस अंदाज में नहीं हुआ और न ही देशभक्त कही जाने वाली तंजीमों ने ही हकीकत को मंजर–ए–आम पर लाने के लिए कोई तहरीख चलाई। वैसे भी अगर नवंबर, 2008 के आखिरी हफ्ते और दिसंबर की बात जाने दें तो इस हमले पर तहकीकात का सिलसिला इस तरह से नहीं चला जैसा कि चलना चाहिए था और न ही मीडिया ने इस जांच के मामले को उतनी अहमियत (महत्व) दी जितनी दी जानी चाहिए थी।

सवाल यह है कि दो साल गुजर जाने के बाद भी हिंदुस्तान की जमीन पर हुए इस सबसे बड़े दहशतगर्दाना हमले की जांच के सिलसिले में आजतक क्या हुआ? हमलावर पाकिस्तान से आए थे। उनकी तादाद दस थी। साजिश रचने वाला जक्कीरहमान लखवी था। अजमल आमिर कसाब वह एक मात्र आतंकवादी था, जो इन इन हमलों के बाद जिंदा गिरफ्त में आया। डेविड कोलमैन हेडली और तेहवर हुसैन राणा के नाम बाद में जुड़े। हेडली पाकिस्तान और अमेरिका दोनों की नागरिकता रखता था। इसका संबंध पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई और अमेरिका की एफबीआई से था। ये सब अपनी जगह। लेकिन इससे आगे क्या हुआ? हमारी टीम अमेरिका गई। क्या पता लगाकर आई, नहीं मालूम। इस दरम्यान हिंदुस्तान के प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह का अमेरिका दौरा भी हुआ और अमेरिका के राष्ट्रपति बराक हुसैन ओबामा भी हिंदुस्तान तशरीफ लाए। शरमउल्ल शेख की हिंदुस्तानी प्रधानमंत्री और पाकिस्तानी प्रधानमंत्री से मुलाकातें भी हुई। इस हमले का जिक्र भी हुआ। यह सब वे बाते हैं, जिनकी जानकारी आपको भी है। मगर जो बात मैं आगे लिख रहा हूं वह जरा नई बात है।

मुंबई में हुए इस हमले के बाद उस वक्त के महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री विलासराव देशमुख ने इस्तीफा दिया। आरआर पाटिल जब महाराष्ट्र के गृहमंत्री के पद से हटाए गए तब भारतीय जनता पार्टी या संघ परिवार ने उन्हें हटाने की मांग नहीं की थी। यह फैसला कांग्रेस पार्टी का था। विलासराव देशमुख जब घटनास्थल का निरीक्षण करने के लिए गए तो वे अपने साथ अपने फिल्म स्टार पुत्र और एक फिल्म प्रोड्यूसर ले गए, इसे ही आपत्तिजनक माना गया और उनका इस्तीफा ले लिया गया। अशोक चव्हाण के आदर्श सोसाइटी में तीन फ्लैट होने के नतीजे पर यह मान लिया गया कि वे इस घोटाले में कहीं न कहीं लिप्त हैं। इसलिए उनके इस्तीफे का मुताल्बा किया गया और उन्हें अपने पद से हटना पड़ा। टेलीकॉम मंत्री ए. राजा स्पेक्ट्रम घोटाले में लिप्त पाए गए और उन्हें भी हटा दिया गया। प्रधानमंत्री के दफ्तर को भी आलोचना का निशाना बनाया गया। भारतीय जनता पार्टी ने कई दिनों तक संसद नहीं चलने दी। कई बार यह प्रार्थना की गई कि वे सदन की कार्यवाही चलने दें। मगर भारतीय जनता पार्टी के सांसद नहीं माने। जबकि कर्नाटक के मुख्यमंत्री येदुरप्पा भी भूमि घोटाले में लिप्त पाए गए।

इस दहशतगर्दाना हमले पर जांच का सिलसिला वैसा नहीं चला जैसा चलना चाहिए था। न ही मीडिया ने इसे उतनी अहमियत दी जितनी देनी चाहिए थी। सवाल यह है कि दो साल गुजर जाने के बाद भी हिंदुस्तान की जमीन पर हुए इस सबसे बड़े दहशतगर्दाना हमले के जांच के सिलसिले में क्या हुआ। अजमल आमिर कसाब, वह एक मात्र दहशतगर्द है जो कि इस हमले के बाद सरकार की पकड़ में आया।

अजमेर बम धमाके में इंद्रेश का नाम आने पर संघ परिवार का हंगामा करना और सुदर्शन द्वारा झूठे

आरोप लगाना, किसी से छिपी हुई नहीं है। हम यह नहीं कहते कि भारतीय जनता पार्टी या संघ परिवार ने भ्रष्टाचार के खिलाफ जिस तरह से मामले को उठाकर संसद नहीं चलने दी वह गलत है। उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था। मगर अगली बात जो हम कह रहे हैं उसकी अहमियत को समझते हुए भारतीय जनता पार्टी और संघ परिवार के अम्ल का जायजा लेना होगा। भ्रष्टाचार के ये मामले ऐसे थे कि उन्हें खामोशी से बर्दाश्त नहीं किया जाना चाहिए था। इसलिए भारतीय जनता पार्टी ने जो कुछ किया वह उसे करना ही चाहिए था। मगर इस बात पर भी गौर करना होगा कि यह भ्रष्टाचार बड़ा मामला था या 26 नवंबर को मुंबई पर हुआ आतंकी हमला ज्यादा बड़ा मामला था? हर बम धमाके के बाद चिंता प्रकट करना और जांच के मामले में सरगर्म होने वाला संघ परिवार इतने बड़े आतंकवादी हमले के बाद कितना सरगर्म हुआ। बीजेपी ने कितनी बार संसद की कार्यवाही ठप्प की। इस मांग के साथ कि 26 नवंबर के तमाम आरोपियों का पर्दाफाश होना चाहिए। मगर मुंबई हमले पर हुए हमले को भारतीय जनता पार्टी ने इस तरह से महत्व नहीं दिया। उसे सही कैसे कहा जा सकता है? बीजेपी ने कितनी बार संसद की कार्यवाही यह कहकर ठप की कि मुंबई पर हुए हमले की पूर्ण रूप से जांच होनी चाहिए। उसने क्यों नहीं आवाज उठाई कि आखिर अनीता उद्या को खुफिया तौर से अमेरिका क्यों ले जाया गया था? सुषमा स्वराज की मुलाकात अमेरिकी राष्ट्रपति बराक हुसैन ओबामा से हुई थी तो क्या इस देशभक्त पार्टी ने डेविड कोलमैन हेडली के बारे में बातचीत की थी? क्या डा. मनमोहन सिंह से यह मांग की गई थी कि अमेरिकी राष्ट्रपति से होने वाली बातचीत में इस मुद्दे को भी शामिल किया जाए? क्या भारतीय जनता पार्टी और संघ परिवार ने यह जानने की कोशिश की है कि मुंबई पर हुए हमले में दस लोगों के अलावा कौन–कौन शामिल था? कम से कम हिंदुस्तान में ऐसा कौन–कौन शक्स था जो इस हमले की साजिश रचने या उसे अमलीजामा पहनाने में शामिल रहा हो। अक्षरधाम पर हमला हुआ। मक्का मस्जिद पर हमला हुआ। इन हमलों के फौरन बाद से लगातार भाजपा का क्या रूख रहा और मुंबई पर हुए हमले के बाद भाजपा का क्या रूख रहा? आज इस बात की तुलना करनी होगी। क्या इसने मुंबई पर हुए हमले के मामले में जांच करवाने की मांग वैसे ही जोरदार ढंग से रखी थी जैसे वह देश में होने वाले अन्य आतंकवादी हमले की जांच के लिए करती आ रही है। अगर नहीं है तो इसकी वजह क्या है?

शहीद हेमंत करकरे और इंस्पेक्टर मोहन चंद शर्मा दो चेहरे हमारे सामने हैं, दोनो को ही शहीद का दर्जा हासिल है। इंस्पेक्टर मोहन चंद शर्मा ज्यादा बड़े हादसे का शिकार हुए या हेमंत करकरे? इंस्पेक्टर मोहन चंद शर्मा का मामला ज्यादा सख्त था या हेमंत करकरे का। इन दोनों के मामले में संघ परिवार का क्या तर्जे अम्ल रहा यह सबके सामने है। क्या इसकी कोई वजह समझ में आती है। मैं इस मजमून को आगे बढ़ाने से पहले पाठकों और भारत सरकार का ध्यान इस खबर की ओर दिलाना चाहता हूँ। जिसका संबंध पूर्व महानिरीक्षक एस.एम. मशरूफ द्वारा लिखी गई किताब "हू किल्ड करकरे" से है। मुंबई हाईकोर्ट ने इस किताब में स्पष्टीकरण के लिए उन्हें तलब किया। इस किताब में उन्होंने आरोप लगाया है कि हिंदू उग्रवादियों और हिंदुस्तानी गुप्तचर एजेंसियों ने मिलकर एटीएस के प्रमुख हेमंत करकरे को मारने की साजिश रची थी। जस्टिस बी.एच. मारलापले और जस्टिस आर.वाई. गावने ने मशरूफ को हिदायद दी कि वह पहली दिसंबर को हाईकोर्ट के सामने पेश हों। मारलापले ने कहा कि अगर कोई सरकारी ऑफिसर सिर्फ खुले आम कोई बयान दे या उसे छाप भी दे तो इसकी जांच होनी चाहिए। अदालत ने कहा कि अगर पुस्तक में सरकार को कुछ आपत्तिजनक लगा हो तो वह इस पर पाबंदी लगा सकती है लेकिन

अक्षरधाम पर हमला हुआ। मक्का मस्जिद पर हमला हुआ। इन हमलों के फौरन बाद से लगातार भाजपा का क्या रूख रहा और मुंबई पर हुए हमले के बाद भाजपा का क्या रूख रहा? आज इस बात की तुलना करनी होगी। क्या इसने मुंबई पर हुए हमले के मामले में जांच करवाने की मांग वैसे ही जोरदार ढंग से रखी थी जैसे वह देश में होने वाले अन्य आतंकवादी हमले की जांच के लिए करती आ रही है। अगर नहीं है तो इसकी वजह क्या है?

आपने ऐसा नहीं किया। शायद आपमें हिम्मत नहीं थी। क्या आपने इसके खिलाफ एफआईआर दर्ज की है।

अदालत ने सरकारी वकील से पूछा कि अगर इस किताब में कुछ आपत्तिजनक था तो मशरूफ के खिलाफ कार्रवाई करनी चाहिए थी। सरकारी वकील ने कोर्ट में पुलिस कमीश्नर संजीव दयाल की तरफ से एक शपथ पत्र पेश किया जिसमें स्पष्ट रूप से कहा गया है कि करकरे की हत्या के मामले में अभिनव भारत सहित किसी भी हिंदू संगठन का हाथ नहीं है। जांच के दौरान ऐसा कोई सबूत नहीं मिला है जिसमें इस मामले की चार्जशीट में नामजद किए गए दो आरोपियों मोहम्मद अजमल आमिर कसाब और अबु इस्माइल के अलावा कोई और आदमी लिप्त हो। यहां तक कि जिस कोर्ट में कसाब के मुकदमा की कार्रवाई चली उसमें भी फर्ज जुर्म लगाते वक्त किसी हिंदू संगठन के इस मामले में लिप्त होने का कोई सबूत नहीं मिला। शपथ पत्र को पढ़ने के बाद अदालत ने कहा कि हम यह नहीं कह रहे कि करकरे को किसी और ने मारा था। हम सिर्फ यह जानना चाहते हैं कि कही कोई भारतीय इसमें लिप्त तो नहीं था क्योंकि मिस्टर मशरूफ आपकी ही फोर्स का एक हिस्सा थे। करकरे की मौत को हिंदुस्तानी खुफिया एजेंसियों और हिंदू उग्रवादियों के सिर थोपे जाने के खिलाफ मुंबई हाईकोर्ट में दो रिट पिटीशनें भी दायर की जा चुकी हैं। इनमें से एक बिहार के एम.एल.ए. राधाकांत यादव और दूसरी कवैती बेदकर ने दाखिल की है। मुझे ऐसा मुशरिफ और विनीता कामते की किताबों के हवाले से बहुत कुछ कहना है। एक नजर अजमेर की दरगाह में हुए बम धमाके पर डालना जरूरी है।

11 अक्टूबर, 2007 को अजमेर की दरगाह में बम धमाके हुए। इन धमाकों में तीन व्यक्ति मारे गए और बीस जख्मी हुए। पुलिस ने पहले लश्करे तोयबा को दोषी ठहराया। उस वक्त केंद्रीय सरकार ने कहा था कि पाकिस्तानी गुप्तचर एजेंसी आईएसआई के इस तरह की धमाकों द्वारा भारत–पाक वार्ता में रूकावटें डालना चाहती है। 22 अक्टूबर से दोनों देशों के बीच आतंकवाद के मामले पर विचार किया जाने वाला था। इसके बाद जिन दिगर लोगों को गिरफ्तार किया गया उनमें मुकेश विसहानी को गोधरा से गिरफ्तार किया गया। इस पर भी दरगाह में बम रखने का आरोप है। देवेंद्र गुप्ता, लवकेश शर्मा, चंद्रशेखर लेवे को पहले ही गिरफ्तार किया जा चुका है। आरोपी संदीप डांगे, रामजी कलासंगरे फरार है। 16 मई, 2010 को इंदौर से राजेश मिश्रा नामक एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया। अबतक सात आरोपियों की निशानदेही हो चुकी है। जिनमें से दो लोग फरार हैं। पहले राजस्थान पुलिस ने अजमेर दरगाह के बम धमाकों के सिलसिले में हूजी और लश्करे तोयबा को कुसूरवार ठहराया था और अब्दुल हफीज, शमीम खुर्शी रहमान और इमरान अली को गिरफ्तार किया था। राजस्थान पुलिस ने यह भी कहा था कि 25 अगस्त के बम धमाकों में जो सिमकार्ड बरामद हुए थे वह बाबूलाल यादव ने प्राप्त किए थे।

पुलिस ने यह दावा किया था कि यह आरोपियों की चालाकी थी। यह सिमकार्ड गलत पहचान के आधार पर प्राप्त किए गए थे। पुलिस ने यह भी कहा था कि शाहिद बिलाल का हाथ भी इन धमााकों के पीछे हो सकता है। पुलिस ने कहा कि यादव के नाम से लिया गया सिमकार्ड शाहिद बिलाल और अन्य मुस्लिम आतंकवादियों ने 13 अक्टूबर, 2007 को पुलिस को धोखा देने के लिए इस्तेमाल किया था। पुलिस शाहिद बिलाल को ही अजमेर, मक्का मस्जिद और 25 अगस्त को होने वाले धमाकों के लिए कुसूरवार करार देती रही है। मैं इन उदाहरणों के द्वारा यह कहना चाहता हूं कि अगर अन्य मामलों में जांच के बाद एटीएस या सीबीआई को कुछ नई जानकारियां मिलीं जो पहले से अलग थीं तो क्या 26 नवंबर के मामले में हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। क्या दस आतंकवादियों के आगे हमारी जांच नहीं होनी चाहिए। हम नई जांच क्यों नहीं करना चाहते? इसकी चर्चा मैं आगे चलकर करूंगा।

(पृ: 11)

इसके बाद सीबीआई की जांच में सामने आया कि अजमेर शरीफ में सुनील जोशी ने बम रखा था। फिर अचानक यह खबर आई कि संघ परिवार के इस कार्यकर्ता का कत्ल कर दिया गया है। हैरानी की बात यह है कि मध्यप्रदेश में जहां यह कत्ल हुआ था, वहां भाजपा सत्तारूढ़ है। लेकिन न तो कातिल का कोई सुराग मिला और न ही किसी ने यह मांग की कि पुलिस इस मामले की जांच क्यों नहीं कर रही है? फिर अजमेर धमाकों के लिए स्वामी असीमानंद को उत्तराखंड के हरिद्वार से गिरफ्तार किया गया। जिनका संबंध वंदेमातरम ग्रुप से था।

पुस्तक में छपी प्रस्तावना

सुदर्शन ने अगर अजमेर बम धमाकों की जांच में इंद्रेश का नाम सामने आने के बाद बौखलाहट में या सुनियोजित ढंग से जांच को प्रभावित करने के लिए या तमाम घटनाओं को आरोप या प्रत्यारोप की शक्ल देने की कोशिश में सोनिया गांधी पर वह गंभीर आरोप न लगाए होते जिनका जवाब दिग्विजय सिंह जी ने 12 नवंबर 2010 को आरएसएस के गढ़ नागपुर में आयोजित विदर्भ मुस्लिम, बुद्धिजीवी फोरम के मंच से दिया, तो मैं आज इतने स्पष्ट शब्दों में वह सब नहीं लिख पा रहा होता जो इस वक्त आपकी नजरों के सामने है।

संघ परिवार ने 26 नवंबर, 2008 को बंबई में होने वाले आतंकवादी हमलों की साजिश रची। उद्देश्य था हेमंत करकरे का कत्ल। क्योंकि कि वे मालेगांव बम धमाकों की जांच के सिलसिले में संघ परिवार का चेहरा सामने रख रहे थे। इस वक्त तक साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर, दयानंद पांडेय, कर्नल पुरोहित, कैप्टन उपाध्याय जैसे ही कुछ चेहरे सामने आ सके थे। मुकम्मल नेटवर्क सामने आना बाकी था। अगर करकरे उस वक्त दहशतगर्दाना हमले का शिकार न हुए होते तो संभव है कि दयानंद पांडेय के लैपटॉप से निकला मिशन–2025 आरएसएस की हिंसापूर्वक भूमिका को पूरी तरह से सामने रख देता और 6 दिसंबर, 1992 को बाबरी मस्जिद की शहादत के बाद मुल्क भर में हुए सांप्रदायिक दंगों का और गत वर्षों में हुए आतंकवादी हमलों का सारा सच सामने आ जाता जो शायद संघ परिवार की हिंदू राष्ट्र की कल्पना को ठोस रूप देने की रणनीति का एक भाग था।

इसलिए हेमंत करकरे के जरिये सामने लाए जा रहे तथ्यों को फौरन रोकना बेहद जरूरी था और इसका एक ही तरीका था करकरे का कत्ल। क्योंकि जान से मार देने की धमकियों के बावजूद करकरे अपना काम जारी रखे हुए थे। फिर अगर सिर्फ करकरे का ही कत्ल किया जाता तो इसी वक्त सीधा इल्जाम संघ परिवार पर आ जाता, इसलिए इससे बचना भी जरूरी था और करकरे जैसे गतिशील अधिकारियों को यह संदेश देना भी जरूरी था कि अगर उन्होंने इस ओर जांच को आगे बढ़ाया तो उसका अंजाम क्या होगा? इसे वे समझ लें। सरकारों के लिए भी यह खुला संदेश था कि इस आग में हाथ डालने का अंजाम कितना खतरनाक हो सकता है। यह 26 नवंबर की शक्ल में देख लें। संभव है कि यह सब हालात की रोशनी में हमारा एक कयास ही हो। मगर जांच में इस दृष्टिकोण को भी शामिल किया जाना जरूरी है। साथ ही क्या आरएसएस ने अपनी देशद्रोही साजिश में इजराइल की प्रशिक्षित फौज और इसके कमांडो का सहयोग प्राप्त किया था। इस ओर भी जांच की जानी चाहिए।

अगर करकरे उस वक्त दहशतगर्दाना हमले का शिकार न हुए होते तो संभव है कि दयानंद पांडेय के लैपटॉप से निकला मिशन–2025 आरएसएस की हिंसापूर्वक भूमिका को पूरी तरह से सामने रख देता और 6 दिसंबर, 1992 को बाबरी मस्जिद की शहादत के बाद मुल्क भर में हुए सांप्रदायिक दंगों का और गत वर्षों में हुए आतंकवादी हमलों का सारा सच सामने आ जाता जो शायद संघ परिवार की हिंदू राष्ट्र की कल्पना को ठोस रूप देने की रणनीति का एक भाग था।

करकरे के बाद भी क्या बेनकाब हो पाएंगे सफेदपोश दहशतगर्द

इसमें कोई शक नहीं कि मुंबई पर हुआ आतंकवादी हमला वास्तव में इतनी बड़ी बात है कि इसके लिए गृहमंत्री शिवराज पाटिल और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार नारायणन को त्यागपत्र दे देना चाहिए था। मगर पिछली तमाम विफलताओं के बावजूद शिवराज पाटिल और नारायणन के उनके पदों पर बने रहने के बावजूद मुंबई एटीएस प्रमुख हेमंत करकरे और उसकी टीम ने मालेगांव बम बलास्ट की जांच के दौरान कुछ रहस्योदघाटन किए, जिससे यह साफ हुआ कि सांप्रदायिक राजनेताओं के साए में साधू और साध्वियों के चोले के पीछे आतंकवाद का खेल खेला जा रहा है। खतरनाक मंसूबे बन रहे थे। जिसकी वजह से यह खतरनाक किटाणु और भगवा ब्रिगेड की मानसिकता के कारण हिंदुस्तानी फौज तक पहुंच गए थे। लेफ्टिनेंट कर्नल पुरोहित और पूर्व अधिकारी उपाध्याय को गिरफ्तार किया जा चुका था। हेमंत करकरे मुंबई में हुए आतंकवादी हमले का शिकार न बनते तो वे इस पूरे नेटवर्क को बेनकाब कर देते। मगर साध्वी प्रज्ञा सिंह पर हिरासत के दौरान हुई ज्यादतियों का बहाना लेकर विपक्ष के नेता लालकृष्ण आडवाणी के प्रधानमंत्री से मिलने और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार एम.के. नारायण के सफाई पेश करने के लिए आडवाणी के घर जाने से यह संकेत मिला कि अब केंद्रीय सरकार महाराष्ट्र एटीएस द्वारा मालेगांव बम धमाकों की सिलसिले में की जा रही जांच पर रोक लगाएगी।

मुंबई पर आतंकवादी हमले के बाद गृहमंत्री शिवराज पाटिल और रक्षा सलाहकार एम.के. नारयणन के त्याग पत्र गलत समय पर उठाए गए सही कदम है। यह दोनों त्याग पत्र बाटला हाउस की घटना के बाद आने चाहिए थे। उड़ीसा, मध्यप्रदेश, कर्नाटक में ईसाईयों और गिरिजाघरों पर हुए हमलों के बाद आने चाहिए थे। क्या मोहनचंद शर्मा और हेमंत करकरे की मौत एक जैसी है? मुंबई पर आतंकवादी हमलों में लिप्त होने का आरोप पहले दक्षिण मुजाहिद्दीन के नाम आया। मगर यह नाम सामने आते ही मीडिया और बुद्धिजीवी संगठनों ने यह सवाल उठाना शुरू कर दिया कि क्या एक अज्ञात संगठन जिसका संबंध हैदराबाद दक्षिण से ही है, वह इतना बड़ा और खौफनाक हमला कर सकता है? तब जाकर पाकिस्तान के हमले में शामिल होने की बात कही जाने लगी। इस आरोप के बारे में कुछ सवाल हैं जिनको पेश करना जरूरी है। यह सवाल सिर्फ हमारे ही दिमाग में नहीं बल्कि कई और लोगों के दिमाग में है। उनका कहना है कि एटीएस प्रमुख मालेगांव के धमाके के बारे में कई चौंकाने वाले रहस्योदघाटन करने वाले थे जिनसे साधु और संतों के चोले में छिपे दहशतगर्द चेहरे बेनकाब हो रहे थे। अब यह आग सिर्फ संघ परिवार ही नहीं बल्कि भाजपा के दामन तक भी पहुंचने लगी थी।

मुंबई पुलिस के पूर्व प्रमुख रेबैरो ने हेमंत करकरे के अंतिम संस्कार के वक्त कहा था कि हेमंत करकरे बीजेपी के रूख से बहुत परेशान और बददिल थे। उन्होंने सुबूतों के साथ दिल्ली जाकर प्रधानमंत्री से मुलाकात करने का फैसला किया था और जाने के लिए अपनी सीट भी बुक करा ली थी। हेमंत करकरे एक सच्चे हिंदू थे। वे अपने धर्म में आस्था रखते थे। उन्हें इस रहस्योदघाटन से हैरानी हुई कि हिंदुत्व के ठेकेदार धर्म के आदेशाों पर अम्ल नहीं कर रहे हैं। एटीएस महाराष्ट्र के प्रमुख एक श्रेष्ठ पुलिस अधिकारी थे। इनकी दयानतदारी संदेह से परे थी। हिंदुत्व ताकतों ने जिहादियों के खिलाफ कार्रवाई करने पर तो एटीएस की पीठ थपथपाई थी। मगर जब मालेगांव के धमाकों के बाद उन्होंने भगवा आतंकवाद के पर्दे उठाने शुरू किए तो जांच पर प्रश्न उठाने शुरू कर दिए गए। एल.के. आडवाणी ने जांच को राजनीति से प्रभावित और गैर पेशेवर कह डाला। एटीएस के खिलाफ अभियान और मालेगांव बम धमाकों की जांच को राजनीतिक रंग देने से बीजेपी को आनेवाले चुनाव में कुछ वोट प्राप्त हो सकते थे। अगर बीजेपी पुनः सत्ता में आती तब वह एटीएस के द्वारा बड़े परिश्रम से जुटाए गए सुबूतों का क्या करती? हेमंत करकरे एक सक्षम अधिकारी थे। उन्होंने अपने वसूलों के लिए अपनी जान कुर्बान कर दी।

(पृ: 28)

शहीदों के अजीज इंसाफ मांग रहे हैं....

मेरी बुनियादी थ्योरी है कि संघ परिवार के लोगों ने आतंकवादी हमले का माहौल तैयार किया है। अब यह मजबूत हो चुकी है। दरअसल संघ परिवार से ज्यादा इसमें मोदी का अम्ल नजर आता है। जी हां, वह हिंदुस्तानी फासिज्म के नए और आधुनिक चेहरे हैं। वे ऐसे आदमी हैं जिन्होंने दर हकीकत में कई मामलों में आरएसएस को भी काफी पीछे छोड़ दिया है। वे मोसाद के दोस्त नम्बर एक हैं। हाल में ही आरएसएस के एक प्रमुख अधिकारी ने मुझे बताया "हमने अपने कैडर के ऊपर अपना कंट्रोल खो दिया है। हम कभी नहीं चाहते थे कि उड़ीसा और कर्नाटक में हालात काबू से बाहर हो जाएं। उड़ीसा में तो हमने ईसाई नेताओं के साथ मिलकर एक संयुक्त घोषणा जारी करने की योजना बनाई थी लेकिन निचले स्तर पर विद्रोह हो गया। वीएचपी और बजरंग दल ने हमारी बातों को मानने से इंकार कर दिया। इसके बाद उन्हें मोदी जैसे व्यक्ति का समर्थन प्राप्त हो गया और हम लाचार हो गए।" बुनियादी तौर पर आरएसएस ने जो जमात खड़ी की थी कि उसके ऊपर अब खुद उसका कंट्रोल नहीं रहा। मोदी की शक्ल में इस जमात ने मोसाद के साथ सांठ–गांठ कर ली। यहां इस बात को भी याद रखिए कि मोसाद का संबंध पाकिस्तानी एजेंसी आईएसआई के साथ भी है। पाकिस्तान, अफगानिस्तान और मध्य पूर्व में सक्रिय बहुत से जेहादी गिरोहों का रिमोर्ट कंट्रोल या तो मोसाद के हाथ में है या अमेरिकी गुप्तचर एजेंसी सीआईए के हाथ में। हाल में ही अमन में एक ऐसी जेहादी एजेंसी का पता चला है जिसे मोसाद ने तैयार किया था।

इसलिए यह संभव है कि जिन उग्रवादियों ने मुंबई पर हमला किया उन्होंने पाकिस्तान को अपने अड्डे के तौर पर इस्तेमाल किया हो। लेकिन उनका संबंध अलग–अलग देशों से हो सकता है। इनमें ब्रिटानिया के कुछ मुसलमान भी हो सकते हैं। एक के बारे में तो यह भी पता चला है कि वह मॉरीशस का रहने वाला है। अब यह बात भी सामने आ रही है कि सउदी अरब के एक व्यक्ति जिसे मौलाना बेदी कहते हैं ने शायद इन जेहादियों को इक्ट्ठा किया था और यहां पर भेजा। इस मास्टर माइंड को इसके लिए सहायता किसने दी थी यह पता लगाना जरूरी है। ऐसे लोगों की कोई आडियोलोजी नही होती। ये अमेरिका के पैदावार हैं। जो पैसे के लिए काम करते हैं।

ओबरॉय होटल के मालिक भी मोदी के गहरे दोस्त हैं। उन्होंने गुजरात के अंदर करोड़ों की पूंजी लगाई है। मुंबई ऑपरेशन से पहले ये आतंकवादी कितने दिनों से पहले ताज और ओबरॉय में ठहरे हुए थे? इन दोनों फाइव स्टार होटलों में वे कब से हथियार और गोला बारूद इक्ट्ठे कर रहे थे। क्या यह होटल प्रबंधकों के सहयोग के बिना संभव है। नरीमन हाउस की बात करें तो मैं वास्तव में हैरान हूँ कि मोसाद द्वारा किए जाने वाले ऑपरेशन में यहूदी क्यों मारे गए? मोसाद हर हालत में दहशतनाक ज्यूइज्म में विश्वास

करता है। जो कि हिंदुत्व की तरह ही एक फासी आडियोलॉजी है। ठीक उसी तरह से जिस तरह से हिंदूत्व सनातन धर्म का हिस्सा नहीं है। प्रज्ञा सिंह के मामले में सनातन धर्म के लोगों नें हिंदूत्व का विरोध किया। मोसाद भी आम यहूदियों की हत्या करवाता रहा है।

जो लोग अपने आप को मोदी या आडवाणी का समर्थक कहते हैं वे महात्मा गांधी के हत्यारों के भी समर्थक है। हिंदुत्व की ओडियोलॉजी शुरू से ही सेक्यूलर भारत का विरोध करती रही है। इस बात के ठोस सबूत हैं कि आरएसएस के प्रमुख गोलवलकर ने मुसलमानों के खिलाफ हमला करने के लिए ब्रिटेन की फौज की सहायता की थी। 1947 के बाद जो मुसलमान हिंदुस्तान में ही ठहर गए, ऐसा उन्होंने अपनी मर्जी से किया। इस बात को लेकर मुसलमानों के भीतर काफी मतभेद था। जिन्ना और मुस्लिम लीग एक ओर हो गए थे। जबकि अन्य लोगों में मुसलमान, उलेमा और उनके समर्थकों ने कांग्रेस का साथ दिया था।

करकरे की मौत

यह बात अब तक साफ नहीं कि उनको कैसे मारा गया? बहादुर शहीदों के रिश्तेदार इंसाफ की मांग कर रहे हैं। वे यह महसूस करते हैं कि जो कुछ नजरों के सामने दिखाई दे रहा है उससे भी परे कोई बात जरूर है। कही न कही करकरे, काम्टे और शालेश्कर की मौत मालेगांव धमाकों की जांच से जुड़ी हुई है जो करकरे की निगरानी में चल रही थी। आखिर करकरे की बीबी और बेटे ने मोदी के द्वारा ऐलान की गई एक करोड़ की धनराशि को लेने से इंकार क्यों कर दिया? मोदी शायद यही सोच रहे थे कि उन्होंने संकट की इस घड़ी में एक बड़ी मुश्किल को दूर कर दिया जो कि मध्यप्रदेश, राजस्थान और दिल्ली के चुनावों से पहले पैदा हुई थी। जरा सोचिए मुंबई आने वाली कश्ती गुजरात सरकार के सहयोग के बिना मुंबई कैसे पहुंच सकती है? सच्चाई यह है कि वे तमाम हिंदूत्ववादी ताकतें जो कि करकरे और एटीएस की सारी टीम को अपना निशाना बनाए हुए थी और उन्हें हिंदुओं का दुश्मन बता रही थीं। वे आज अचानक उन्हें अपना हीरो कैसे कहने लगी। कुछ लोगों ने मुझे ईमेल भेजे हैं और कह रहे हैं कि वे आडवाणी और मोदी की हिमायत करते हैं। अब ये तमाम लोग करकरे की मौत की हिमायत कर रहे हैं। ठीक उसी तरह से जैसे उन्होंने महात्मा गांधी की हत्या की हिमायत की थी। हमें यह जानना चाहिए कि कई हिंदुत्ववादी लोग करकरे से नफरत करते थे। उन्होंने उनको मारने के लिए अपना दिमाग लगाया और ऐसे ही लोग उनकी हत्या के लिए जिम्मेवार हैं। मोदी और आड़वाणी जैसे लोग जो इंटरनेट पर खुद को हिंदू कह रहे हैं ये लोग मालेगांव ध मााके की जांच को देखना नहीं चाहते थे। जिसमें करकरे बहुत जल्द प्रवीण तोगड़िया का नाम भी लेने वाले थे और छोटे राजन का भी। लेकिन इससे पहले ही करकरे को रास्ते से हटा दिया गया। विदेशी एजेंसियों के इशारे पर फिरकापरस्त ताकतें हिंदुस्तान को बर्बाद करना चाहती हैं ताकि वह भी अमेरिका और इजराइल के हलके में शामिल हो जाये। इसी वजह से अमेरिकीयों, ब्रिटिश और इजराइलियों को निशाना बनाया गया।

नरिमन हाउस ऐसा केंद्र था जहां पर बहुत से संदिग्ध इजराइली आया करते थे। संभव है कि यही लोग आतंकवादी हमलों में भी शामिल रहे हों। और उन्होंने अपने ही लोगों को मार दिया हो। मुंबई पर होने वाला आतंकवादी हमला एक बड़ा तजर्बा है यानी हिंदुस्तान में मौजूद इन ताकतों के लिए जिनमें से एक हिंदुस्तान को अमेरिकी और इजराइली प्रभाव में ले जाना चाहते हैं। दूसरी ताकतें वे लोग हैं जो कि पाकिस्तान, चीन और ईरान के साथ उसके मैत्रीपूर्ण संबंध चाहते हैं।

(पृ: 41)

बुनियादी तौर पर आरएसएस ने जो जमात खड़ी की थी कि उसके ऊपर अब खुद उसका कंट्रोल नहीं रहा। मोदी की शक्ल में इस जमात ने मोसाद के साथ साज–बाज कर ली। यहां इस बात को भी याद रखिए कि मोसाद का संबंध पाकिस्तानी एजेंसी आईएसआई के साथ भी है। पाकिस्तान, अफगानिस्तान और मध्य पूर्व में सक्रिय बहुत से जेहादी गिरोहों का रिमोर्ट कंट्रोल या तो मोसाद के हाथ में है या अमेरिकी गुप्तचर एजेंसी सीआईए के हाथ में।

१९९३ के अलावा सभी दहशतगर्दाना हमले संघ और मोसाद की साजिश

आरएसएस का आतंकवाद 1991 तक निष्क्रिय पड़ा हुआ था क्योंकि कांग्रेस ने इसे दबा दिया था। इसलिए भी की सोवियत रूस के साथ हिंदुस्तान के करीबी संबंध थे और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आरएसएस की पीठ ठोकने वाला कोई नहीं था। 1991 के बाद यानि राजीव गांधी कत्ल और सोवियत रूस के विघटन के बाद हिंदुस्तान ने इजराइल को मान्यता प्रदान कर दी और अमेरिका से नजदिकीयां बढ़ गईं। हिंदुस्तान में आतंकवाद का अध्ययन करने के लिए यह पृष्ठभूमि काफी खतरनाक है। इजराइल को मान्यता देने के बाद भारत में आतंकवाद की शुरूआत हुई।

1990 में मुसलमानों पर जुल्मोसितम का सिलसिला फिर तेज हो गया था। किसी जमाने में हिंदुस्तान में बहुत सारे बम के धमाके हुए। करकरे इस सच्चाई को सामने ला रहे थे कि 1993 को छोड़कर अब तक देश में हुए सभी धमाके संघ और मोसाद के गठजोड़ का नतीजा है। आप उनकी बीबी से जा कर पूछें अपनी मौत से पहले वे इसकी विस्तृत जानकारी मीडिया के सामने रखने जा रहे थे और इसके बाद वे इस देश को छोड़कर कही बाहर जाने का इरादा रखते थे। क्या आप यह नहीं देख रहे हैं कि करकरे की मौत पर कोई सरकारी बयान आज तक नहीं आया। तो फिर तथ्यों को कौन तोड़ मरोड़कर पेश कर रहा है। आज सिर्फ दो किस्म के हिंदू हैं। एक वे जो आरएसएस और आतंकवाद का समर्थन करते हैं और दूसरे वे जो इसका विरोध करते हैं।

इजराइल, अमेरिका और आरएसएस का यह खेल 1991 से चल रहा है। दहश्त पैदा करो, मुसलमानों के नाम का इस्तेमाल करो और अंडरवर्ल्ड के चंद अपराधियों को जेहादी कहकर पुकारो और इस तरह से तमाम मुसलमानों को बदनाम करो। आरएसएस, अमेरिका और इजराइल का यह मिक्सचर सिर्फ मुसलमानों को परेशान करने के लिए नहीं है। वे मुस्लिम आतंकवाद के नाम पर मुसलमानों को परेशान करके देश को अस्थिर करना चाहते हैं। अब आप यह पूछेंगे कि आरएसएस आखिर क्यों हिन्दुस्तान को अस्थिर करना चाहेगा? फासिस्ट, भगवान में और इंसान के द्वारा बनाई गई रियासत में यकीन नहीं रखते। आरएसएस का लक्ष्य अखंड भारत बनाना है। उसे कही भी खड़ा किया जा सकता है। वे उस हिंदुस्तान को नहीं मानते जो 1947 के बाद बना। उनके दिमाग में एक काल्पनिक हिंदुस्तान का खाका है जिसकी सीमाएं फिलीस्तीन

तक मिली हुई हैं। इजराइल के बाहर रहने वाले यहूदी जिन्हें साइमंस कहते हैं वे मोसाद की मदद के लिए हमेशा तैयार रहते हैं और इसमें अपनी जान भी दे सकते हैं। मुंबई के नरिमन हाउस में रहने वाले रबी और उसकी पत्नी भी साइमंस थे। मैने बहुत से सबूत पेश किए हैं। क्या आप जानते हैं कि करकरे को नौ एम.एम. के बुलेट से मारा गया? यह गोलियां पुलिस के सर्विस रिवाल्वर में ही इस्तेमाल होती हैं न कि एके–47 में। आप मेरा इशारा समझ ही गए होंगे।

फिलहाल रॉ और गृहमंत्रालय में शिवराज पाटिल के विरोधी अधिकारी करकरे के कत्ल के मामले में गुजरात एटीएस की भूमिका की छानबीन कर रहे हैं। क्या आप इसे अब नहीं समझ पाए? एक और पुख्ता सबूत नरिमन हाउस के बाहर खड़े होकर सीएनबीसी न्यूज के एक जर्नलिस्ट अरूण अस्थाना ने बताया कि ऐसी भी सूचनाएं प्राप्त हुई हैं कि कुछ आतंकवादी हमले से पंद्रह दिन पहले नरिमन हाउस के समीप एक गेस्ट हाउस में पिछले पंद्रह दिनों से ठहरे हुए थे। इनके पास भारी मात्रा में गोला बारूद, खाना और अस्त्र–शस्त्र थे। अब दूसरी रिपोर्टों से भी इस बात की पुष्टि हुई है कि नरीमन हाउस में रहने वालों ने भारी मात्रा में खाने के समान का ऑडर दिया था। यह खाना 30–40 लोगों के लिए कई दिनों के लिए काफी था। इतनी मात्रा में खाना क्यों मंगवाया गया? और आखिर तक नरिमन हाउस पर हमला क्यों नहीं किया गया? मुंबई में रहने वाला एक गुजराती हिंदू CNN-IBN पर आया और उसने दावा किया कि नरीमन हाउस में संदिग्ध गतिविधियां जारी थीं और बहुत से विदेशी लोग इसमें आते जाते रहे। चैनल ने इस खबर को दुबारा नहीं चलाया। इसके बाद जब मुंबई के आम लोगों ने नरीमन हाउस पर ध ाावा बोलने की धमकी दी तो कमांडो अंदर घुसे। अगर नरीमन हाउस के अंदर सिर्फ दो ही उग्रवादी थे तो फिर इस पर हमला करने में इतनी देर क्यों की गई?

इसके बाद यह रिपोर्ट आई कि यह कुछ हद तक हैरानी की बात है कि मुंबई के कामा हास्पिटल में मौजूद आतंकवादी फर्राटेदार मराठी बोल रहे थे। एक मराठी दैनिक महाराष्ट्र टाइम्स ने यह रिपोर्ट प्रकाशित की जो आतंकवादी कामा अस्पताल में फायरिंग कर रहे थे। वे सादे लिबास में तैनात हस्पताल के एक कर्मचारी से मराठी में बातचीत की थी। इसी समाचारपत्र के अनुसार जिन आतंकवादियों ने एटीएस प्रमुख हेमंत करकरे, अशोक कांम्टे और विजय सालेश्कर को अपना निशाना बनाया था वे फर्राटेदार मराठी बोल रहे थे। इस समाचार पत्र ने यह भी दावा किया कि यूनिफॉर्म में दो वाच मैनों से गोली चला रहे आतंकवादियों ने बंदूक की नोक पर मराठी में उनसे पूछा क्या तुम यहां पर मुलाजिम हो? इनमें से एक ने आतंकवादियों के पैर पकड़कर कहा कि मैं यहां काम नहीं करता हूं। मेरी बीबी को दिल का दौरा पड़ा है और मैं इसे भर्ती कराने यहां लाया हूं। आतंकवादी ने उसे डांटकर मराठी में पूछा कि तुम सच बोल रहे हो या झूठ? कर्मचारी ने कहा भगवान कसम मैं सच बोल रहा हूँ। दूसरी रिपोर्ट यह बताती है कि मुंबई के पुराने यहूदी जो यहां से इजराइल चले गए हैं। वे भी फर्राटेदार मराठी बोलते हैं और मोसाद से उनके रिश्ते हैं।

हेमंत करकरे की मौत एक पहेली बनी हुई है। तमाम सरकारी बयान विरोधाभासी हैं। कुछ का कहना है कि उन्हें सीएसटी के पास मारा गया तो कुछ कहते हैं कि उनकी मौत कामा अस्पताल के पास हुई। कुछ इसे मेट्रो सिनेमा के पास बताते हैं। कुछ का तो यह भी कहना है कि उन्हें उस वक्त मारा गया जब वे पुलिस जीप में सवार थे। लेकिन उन्हें गोली कहाँ पर लगी? कुछ इसे गर्दन पर बताते हैं तो कुछ कहते हैं कि यह दिल के समीप लगी। करकरे को एक टीवी पर बुलेटप्रूफ जैकेट पहने हुए दिखाया गया। ऐसी हालत में गोली इनकी गर्दन पर नहीं लगनी चाहिए थी। जब तक कोई स्नैपर इनका इंतजार न कर रहा हो और अगर यह गोली उनके दिल के करीब लगी तो फिर

करकरे इस सच्चाई को सामने ला रहे थे कि 1993 को छोड़कर अब तक देश में हुए सभी धमाके संघ और मोसाद के गठजोड़ का नतीजा है। आप उनकी बीबी से जा कर पूछें अपनी मौत से पहले वे इसकी विस्तृत जानकारी मीडिया के सामने रखने जा रहे थे और इसके बाद वे इस देश को छोड़कर कही बाहर जाने का इरादा रखते थे।

इजराइल, अमेरिका और आरएसएस का यह खेल 1991 से चल रहा है। दहश्त पैदा करो, मुसलमानों के नाम का इस्तेमाल करो और अंडरवर्ल्ड के चंद अपराधियों को जेहादी कहकर पुकारो और इस तरह से तमाम मुसलमानों को बदनाम करो। आरएसएस, अमेरिका और इजराइल का यह मिक्सचर सिर्फ मुसलमानों को परेशान करने के लिए नहीं है। वे मुस्लिम आतंकवाद के नाम पर मुसलमानों को परेशान करके देश को अस्थिर करना चाहते हैं।

उन्होंने अपना जैकेट कब उतारा? दूसरी बात यह भी उभर कर आ रही है कि करकरे को कामा के पास मारा गया था लेकिन काम्टे और सालेश्कर की मौत मेट्रो के पास हुई थी।

अब यह बातें भी जाहिर हो रही हैं

1. बहुत से लोग सफेदफॉम रहे होंगे।

2. क्या वे अंतर्राष्ट्रीय खरीदे हुए सैनिक थे? अगर हां तो वे किस देश के थे? किसने उन्हें इकट्ठा किया था? यह बात सबको मालूम है कि मोसाद और सीआईए के पास ऐसे कई लोग हैं उनमें कुछ तथाकथित जेहादी भी हैं जो जेहाद के नाम पर मुसलमानों को गुमराह करते हैं। हो सकता है कि मुंबई में भी इन्हीं में से कुछ को इस्तेमाल किया गया हो। लेकिन इन लोगों के पास अमेरिका, ब्रिटानिया, मॉरीशस और मलेशिया के पासपोर्ट क्यो थें?

3. वे कौन से मराठी थे जिन्होंने करकरे का कत्ल कर दिया। कामा हास्पिटल के पास वाली सड़क बिल्कुल सुनसान रहती है। यह सीधे मुंबई सीआईडी हेडक्वार्टर के पिछले दरवाजे तक जाती है। पुलिस के सूत्रों से पता चला है कि करकरे को वहां पर करकरे विरोधी टीम के द्वारा लाया गया था जिसमें मुंबई पुलिस के हिंदुत्व समर्थक अधिकारी और छोटे राजन गैंग के लोग शामिल थे। करकरे छोटे राजन के खिलाफ थे तो सालेश्कर भी प्रदीप शर्मा के विरोधी थे। इसलिए मराठी बोलने वाले आतंकवादी कुछ ऐसे यहूदी हो सकते हैं जिनका संबंध मुंबई से रहा हो। या फिर हिंदुत्व ब्रिगेड के भाड़े के कातिल या छोटे राजन गिरोह के आदमी हो सकते हैं।

(पृः 61)

मुंबई हमलों में मोसाद का हाथ-अमरेश मिश्रा

उन्होंने मुंबई में एटीएस के प्रमुख हेमंत करकरे को इसलिए मार दिया ताकि वे मालेगांव धमाकों में मोसाद और आरएसएस के रिश्तों और इनके हाथ होने की तफ्तीश न कर सकें।" मुंबई पर हमला हो गया वे लोग जिन्होंने महात्मा गांधी का कत्ल किया था और बाबरी मस्जिद को ध्वस्त किया था वे जीत गए। लेकिन ऐसा पहली बार हुआ है जब कोई मुसलमानों को इसके लिए जिम्मेवार नहीं ठहरा रहा है। मुंबई एटीएस प्रमुख हेमंत करकरे को सबसे पहले मार दिया गया। यह वही शक्स था जो मालेगांव बम धमाकों की तफ्तीश कर रहा था जिनमें एक के बाद एक करके कई हिंदू संगठनों के नाम सामने आ रहे थे। यहां तक कि बीजेपी वीएचपी और आरएसएस के लोग भी उन्हें धमकाने लगे थे। दहशतगर्दों का पहला निशाना भी वही बने।

अब हमारा यह शक यकीन में बदल चुका है कि इस पूरी साजिश में मोसाद का हाथ था। इस पूरे शहर पर मोसाद ने हमला किया। या फिर किराये के दहशतगर्दों से हमला करवाया। इस तरह का सुनियोजित हमला करना किसी एक संगठन के बस की बात नहीं है। यह बात भी अब वाजया है कि मोसाद को इस ऑपरेशन में स्थानीय सांप्रदायिक ताकतों से भी मदद मिली होगी। इसलिए आरएसएस, वीएचपी और बजरंग दल पर पाबंदी लगाई जानी चाहिए। मुसलमानों और सेकुलर हिंदुओं की बात अब साबित हो चुकी है कि आरएसएस जैसी ताकतें और इजराइल भारत को अस्थिर करना चाहते हैं। एक अखबार ने एक तस्वीर प्रकाशित की है जिससे जाहिर होता है कि मोसाद के वर्तमान और पूराने अफसर हिंदुस्तान के अंदर साधु संतों से मिलने आए थे। ऐसे में कोई न कोई साजिश जरूर रची गई होगी। यह हिंदुस्तानी हिंदुओं के लिए बेदार हो जाने का वक्त है। गांधी के कातिलों ने एक बार फिर हल्ला बोल दिया है। यह राष्ट्रवाद का प्रश्न है। अगर किसी ने हिम्मत नहीं जुटाई तो हिंदुस्तानी फौज इसे अपने हाथ से नहीं जाने देगी। फिरकापरस्त और देश दुश्मन तत्वों ने हिंदुस्तान की नींव हिला डाली है। जिसकी वजह से हिंदुस्तानी संविधान और पूरा देश खतरे में है। (पृ: 190)

अमरेश मिश्रा ने 26/11 के तुरंत बाद वेबसाइट पर लेख लिखकर इसे मोसाद एवं संघ परिवार की मिली जुली साजिश बताया था। उसने तो यह भी लिख दिया कि विपक्ष के नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी की हत्या कर दी जानी चाहिए। बाद में लेख से इस कथन को हटा लिया गया। मिश्रा शिवानी भटनागर की हत्या के सिलसिले में गिरफ्तार आरोपी (निलंबित पुलिस अधिकारी) आर. के. शर्मा के दामाद हैं। पिछले लोकसभा चुनाव में मिश्रा ने लखनऊ से उलेमा काउंसिल के टिकट पर चुनाव लड़ा था।

मुंबई में दहशतगर्दी और मालेगांव की हिंदू दहशतगर्दी के दरम्यान ताल्लुक

मुल्क में हाल के दिनों में होने वाली दहशतगर्दी की हकीकत का ईल्म होने वाला है और इनमें हिंदू जमातों के शामिल होने का राज आहिस्ते–आहिस्ते खुल रहा था। एटीएस के प्रमुख हेमंत करकरे बड़ी बुद्धिमता से इन असली आतंकवादियों के चेहरों से पर्दे उठा रहे थे जिन्होंने हिंदुस्तान के अंदर हाल में होने वाली आतंकवादी घटनाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी इस वजह से उन्हें जान से मारने की धमकी भी मिली और वह भी मुंबई पर होने वाले आतंकवादी हमले से सिर्फ दो दिन पूर्व।

मुंबई के आतंकवादियों का पहला निशाना एटीएस के नेता थे। मालेगांव के क्रीमिनल्स के तीन सबसे वांटेड व्यक्ति मुंबई के आतंकवादी हमलों में सबसे पहले कत्ल कर दिए गए। इनमें हेमंत करकरे भी शामिल थे। यह बात सच है कि मुंबई पहुंचने वाले आतंकवादी समुद्र के रास्ते से शहर में घुसे लेकिन क्या उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय सीमा पार की थी या फिर गुजरात से या हिंदुस्तान के अंदर किसी नजदीकी इलाका से समुद्र के रास्ते से आए थे। अब यह बात सबको मालूम हो चुकी है कि मुंबई के इन दहशतगर्दों को अपने निशानों का पूरा इल्म था। उनका सबसे बड़ा निशाना एटीएस के प्रमुख थे। वे ताज और उसके अन्य निशानों से भी पूरी तरह वाकिफ थे। मुंबई की आतंकवादी कार्रवाई से पहले 38 घंटों के दौरान में किसी को इन आतंकवादियों के बारे में कुछ पता नहीं था और न ही किसी को पाकिस्तान से उनके संबंधों की जानकारी थी। खुद मीडिया भी इससे अनजान था। लश्कर ए तोयबा के जिहादियों की दाढ़ी और पगड़ी के बरक्स इन नवजवानों की दाढ़ियां मुड़ी हुई थी। क्या ये वास्तव में जेहादी थे? इनमें से एक दहशतगर्द जिसका चेहरा मीडिया ने दिखाया था, इसके एक हाथ में पीले रंग के धागे बंधे हुए थे। यह संघ का चिन्ह है जैसा कि गुजरात के दंगों में देखने को मिला। आरएसएस कैडर की महिलाएँ भी अपने कलाईयों पर इसे बांधती हैं।

हालात उस वक्त फौरन बदल जाते हैं जब गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी मुंबई आते हैं। मोदी से पहले सोनिया, प्रधानमंत्री और एल.के. आडवाणी का भी मुंबई का दौरा होता है। लेकिन किसी ने भी इनके दौरे का ऐलान नहीं किया आखिर क्यों?

मोदी ने ही आखिर मुंबई का दौरा क्यों किया? दूसरे राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने ऐसा क्यों नही किया।

मोदी ने ही सबसे पहले मुंबई पर होने वाले आतंकवादी हमलों के पीछे पाकिस्तान का हाथ बताया था। वे इसे कैसे जानते हैं?

सबसे पहले मोदी ने ही हमले में मारे गए सुरक्षाकर्मियों में से हरेक को एक–एक करोड़ की सहायता देने का ऐलान किया था आखिर क्यों? गुजरात और मुंबई के आतंकवादी हमले में क्या संबंध है?

(पृ:199)

यह बात सच है कि मुंबई पहुंचने वाले आतंकवादी समुद्र के रास्ते से शहर में घुसे लेकिन क्या उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय सीमा पार की थी या फिर गुजरात से या हिंदुस्तान के अंदर किसी नजदीकी इलाका से समुद्र के रास्ते से आए थे।

हिंदू कट्टरपंथी देश को हिंदू राष्ट्र बनाने के लिए सक्रिय

एटीएस प्रमुख हेमंत करकरे के नेतृत्व में की गई जांच के अनुसार मालेगांव में सितंबर 2008 में होने वाले बम धमाकों की जांच के दौरान यह पता चला था कि इस साजिश में शामिल आरोपियों का उद्देश्य सिर्फ इस टेक्सटाइल टाउन को नुकसान पहुंचाना ही था बल्कि वह 2025 में हिंदूस्तान को हिंदू राष्ट्र में बदलने के लिए काम कर रहे थे। इस मामले में गिरफ्तार किए गए सुधाकर द्विवेदी उर्फ दयानंद पांडेय ने जांच के दौरान बताया कि हिंदुस्तान में एक आर्यावर्त राष्ट्र बनाने के लिए ये लोक सक्रिय थे। एटीएस के अधिकारी ने बताया कि वे हिंदूस्तान में ऐसा शासनतंत्र बनाना चाहते थे जिस तरह से आर्य राज्य करते थे। उनकी कल्पना थी कि हिंदूस्तान को एक हिंदू देश और अखंड भारत में तब्दील कर दें। संदिग्ध व्यक्तियों ने देश भर में समान विचार वाले लोगों को अपने साथ मिलाने की योजना बनाई थी। वे सरकारी विभागों में कार्यरत लोगों के सहयोग से देश को एक सेकुलर राज्य से हिंदू राष्ट्र बनाने का इरादा रखते थे। उनकी यह भी योजना थी कि अगर उनकी यह योजना विफल हो जाती है तो वे निर्वासित जीवन व्यतीत करेंगे। पुरोहित ने उन्हें यह भी भरोसा दिलाया था कि अन्य देशों में उन्हें राजनीतिक शरण मिल जाएगी। द्विवेदी को मालेगांव धमाकों में संलिप्त होने के आरोप में कानपुर से 14 नवंबर को गिरफ्तार किया गया था। आरोपी ने पुरोहित को आरडीएक्स प्राप्त करने और धमाका करने की हिदायत दी थी। एटीएस ने कैप्टन रमेश उपाध्याय और साध्वी प्रज्ञा सिंह सहित 11 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया था। द्विवेदी ने बताया कि 1989 में वे वायुसेना में शामिल हुआ था मगर 1990 में उसने नौकरी छोड़ दी थी। आरोपी लैपटॉप नष्ट करना चाहता था मगर पुलिस ने उसे पहले ही जब्त कर लिया था।

(पृ: 219)

सुधाकर द्विवेदी उर्फ दयानंद पांडेय ने जांच के दौरान बताया कि हिंदुस्तान में एक आर्यावर्त राष्ट्र बनाने के लिए ये लोक सक्रिय थे। एटीएस के अधिकारी ने बताया कि वे हिंदूस्तान में ऐसा शासनतंत्र बनाना चाहते थे जिस तरह से आर्य राज्य करते थे। उनकी कल्पना थी कि हिंदूस्तान को एक हिंदू देश और अखंड भारत में तब्दील कर दें।

आरएसएस के प्रमुख लीडरों को मारने की साजिश

सीबीआई ने अपनी एक रिपोर्ट में यह रहस्योदघाटन किया है कि किस तरह से अभिनव भारत नामक संगठन आरएसएस और विश्वहिंदू परिषद के विकल्प के रूप में खुद को एक कट्टर हिंदूवादी संगठन बनाने का मंसूबा बना रहा था। लेफ्टिनेंट कर्नल श्रीकांत पुरोहित ने आरएसएस के लीडर इंद्रेश कुमार को मारने की साजिश का भी उल्लेख किया था। उसके अनुसार इंद्रेश कुमार नेपाल में हिंदुओं के कत्लेआम का दोषी था। उसने यह बात भी मानी थी कि दयानंद पांडेय ने पुणे में आरएसएस के एक नेता श्याम आप्टे के आदेश का पालन करते हुए आलोक नाम के व्यक्ति को 11–12 अप्रैल को भोपाल में हथियार भी दिया था। जिससे इंद्रेश की हत्या की जानी थी। आलोक कोलकाता की एक हिंदू कार्यकर्त्ता तपन घोष का साथी है। पुरोहित ने आलोक को 12 गोलियां भी इंद्रेश को मारने के लिए भेजी थी। दयानंद पांडेय ने अगस्त, 2007 में टेलीफोन पर पुरोहित और डॉ. आरपी. सिंह की बातचीत भी करवाई थी। उसने यह कहा था कि आईएसआई ने इंद्रेश को तीन करोड़ रुपये दिए थे। बाद में जब उसने यह बात तोगड़िया को बताई तो तोगड़िया ने कहा कि इस बात की उसे जानकारी है। पुरोहित की तोगड़िया से पहली मुलाकात फरवरी, 2006 में नासिक में वीएचपी के प्रमुख विनायक के घर पर हुई थी। इसी वर्ष दिसंबर में भी वे दोनों मिले थे। तोगड़िया ने अभिनव भारत का खाका पेश करने के लिए पुरोहित की काफी तारीफ भी की। मार्च– अप्रैल, 2007 में तोगड़िया ने पुरोहित को टेलीफोन पर उन लोगों का नाम बताया जो अभिनव भारत को चंदा देना चाहते थे। अगस्त–सितंबर में तोगड़िया ने दो लाख रुपए दिए जिसे अभिनव भारत के कोषाध्यक्ष समीर कुलकर्णी तक पहुंचा दिया गया। 2 अगस्त, 2008 को तोगड़िया ने पुरोहित को वीएचपी की मध्यप्रदेश शाखा को खत्म करने की वजह से काफी डांट पिलाई। फरवरी में श्याम आप्टे ने पुरोहित को दो लाख रुपये देकर इंद्रेश को मारने की हिदायत की। पुरोहित ने यह पैसा एक अन्य कार्यकर्ता राकेश धावड़े तक पहुंचा दिया। जिसने पुरोहित को पचास हजार रुपये में एक हथियार दिया। यही हथियार आलोक को दिया गया। पुरोहित ने यह भी बताया कि धावड़े वही व्यक्ति है जिसने नांदेड धमाके में मारे गए आरएसएस के एक व्यक्ति को प्रशिक्षण दिया था। इससे एक महीना पहले पुरोहित ने धावड़े को और हथियार खरीदने के लिए तीन लाख बीस हजार रुपए दिए थे। 11 अप्रैल को पुरोहित ने असीमानंद के कहने पर साध्वी प्रज्ञा से भोपाल में बातचीत की थी। साध्वी ने पुरोहित को बताया था कि इंद्रेश उसके पिता जैसे हैं। जून 2008 में प्रज्ञा ने बताया कि वह इनके साथ काम नहीं करना चाहती थी। साध्वी की पुरोहित से यह मुलाकात मालेगांव धमाकों के पांच दिन बाद हुई। आप्टे और पांडेय ने इंद्रेश को मारने पर जोर दिया। डांगे ने हथियार चलाने का प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए पुरोहित को बार बार अपने पास बुलाया। 3 अगस्त, 2008 को महाकाल धर्मशाला में एक बैठक के दौरान पांडेय ने पुरोहित को हुक्म दिया कि वह रामजी के लिए आरडीएक्स का प्रबंध करे। इसी महीने के अंत में प्रवीण पाटिल नामक व्यक्ति पंचमढ़ी में यह बताने के लिए आया कि इसने इंटरनेट सर्च के द्वारा विष्फोटक पदार्थ तैयार करने का पता लगा लिया है। 23 अक्टूबर, 2008 को कर्नल श्रीवास्तव ने मालेगांव ध्माकों के सिलसिले में पुरोहित से पूछताछ की, कर्नल ने डॉ. आरपी सिंह से भी बात करने को कहा।

(पृ: 232)

पुरोहित ने आरएसएस के लीडर इंद्रेश कुमार को मारने की साजिश का भी उल्लेख किया था। उसके अनुसार इंद्रेश कुमार नेपाल में हिंदुओं के कत्लेआम का दोषी था। उसने यह भी बताया कि दयानंद पांडेय ने पुणे में आरएसएस के एक नेता श्याम आप्टे के आदेश का पालन करते हुए आलोक नाम के व्यक्ति को 11–12 अप्रैल को भोपाल में हथियार भी दिया था। जिससे इंद्रेश की हत्या की जानी थी।

अब बताओ असम बम धमाकों का असली मुजरिम कौन है

अजीज बर्नी ने यह संदेह व्यक्त किया है कि असम में जो बम धमाके हुए थे उसके लिए पुलिस ने इंडियन मुजाहिद्दीन और इस्लामिक सेक्यूरिटी फोर्स को भले ही दोषी ठहराया हो मगर इसके लिए असली दोषी बजरंग दल है और उसी का कोड नाम इंडियन मुजाहिद्दीन है।

अपने इस दावे के पक्ष में अजीज बर्नी ने बोडो नेता मोलाहारी के इस बयान का उल्लेख किया है जिसमें उन्होंने कहा है कि असम बम धमाकों के बारे में जो एसएमएस एक टीवी चैनल को प्राप्त हुआ था। जिस पर पूरी कहानी गढ़ कर इंडियन मुजाहिद्दीन और इस्लामी सेक्यूरिटी फोर्स जैसी काल्पनिक संगठनों को दोषी ठहराया गया है वह सरासर गलत है। उन्होंने कहा है कि यह आरोप मुसलमानों के सिर पर थोप कर बोडो आदिवासियों और मुसलमानों को आपस में लड़ाने का प्रयास किया गया है। बोडोलैंड क्षेत्रीय काउंसिल (बीटीसी) के नेता ने कहा कि यह एसएमएस बोगस और जाली है। यह बात भी गलत है कि यह संगठन बोडो आदिवासियों का मुकाबला करने के लिए मुसलमानों ने बनाया है। इस एसएमएस ने सुरक्षा और गुप्तचर एजेंसियों में खलबली मचा दी है। यह एसएमएस एक मोबाईल फोन से जो कि उसके एक मुसलमान के नाम पर है। यह एसएमएस भेजा गया था लेकिन आज नौगांव के पुलिस कप्तान ने यह दावा किया है कि इस फोन या गांव से किसी ने कोई ऐसा एसएमएस नहीं भेजा था बल्कि किसी ने हैक करके यह एसएमएस भेजा है। पुलिस ने मोबाईल फोन वाले व्यक्ति नजीर अहमद को क्लीन चीट दे दी है।

अब सवाल यह पैदा होता है कि यह एसएमएस किसने भेजा? पुलिस की जांच के बाद यह बात सिद्ध हो गई है कि एसएमएस किसी गुप्त मोबाईल से भेजा गया था। जो नाम दिया गया वह गलत था। साफ जाहिर है कि जिसने यह हरकत की है उसके दो उद्देश्य हैं। एक तो यह है कि इस

बजरंग दल एक संदिग्ध संगठन है और भूतकाल में हुए बम धमाकों में इसके कार्यकर्ता लिप्त रहे हैं। बम बनाते मारे भी गए हैं और पकड़े भी गए हैं। कई संगठनों ने इस पर पाबंदी लगाने की बात भी कही है। विख्यात सामाजिक कार्यकर्ता तिस्ता शितलवाड ने इस मामले को अपने मैगजीन में उठाया है।

मुसलमान व्यक्ति को बमकांड से फंसा दिया जाए और फिर मुसलमानों को इसका दोषी ठहराया जाए। दूसरा यह है कि बम कांड के असली दोषियों को बचा दिया जाए। अब यह जिम्मेवारी, पुलिस, गुप्तचर विभाग, राज्य सरकार और केंद्र सरकार की है कि वह इस बात का पता लगाए कि आखिर वे कौन लोग हैं जो हर बम धमाके के बाद मुसलमानों को ही उसके लिए जिम्मेवार ठहराने की कोशिश करते हैं। ऐसा ही दिल्ली बम धमाकों के बाद भी सामने आया। जो दिल्ली पुलिस छोटे–छोटे मामले हल नहीं कर सकी थी। वह एक सप्ताह के बाद ही बम धमाकों के आरोपियों का पता लगाने का दावा करने लगी। उसने आतिफ और साजिद को दिल्ली बम कांड का मास्टर माइंड करार देकर बाटला हाउस की फर्जी मुठभेड़ में गोली से उड़ा डाला।

अब वही हालत दुबारा हमारे सामने आ रही है। अगर यह एसएमएस फर्जी है तो इंडियन मुजाहिद्दीन और इस्लामी सेक्यूरिटी फोर्स जैसे संगठन भी फर्जी हैं। क्या यह इस्लाम और मुसलमानों को बदनाम करने के लिए किया जा रहा है? क्या इसके पीछे संघ परिवार और बजरंग दल का हाथ नहीं है? बजरंग दल एक संदिग्ध संगठन है और भूतकाल में हुए बम धमाकों में इसके कार्यकर्ता लिप्त रहे हैं। बम बनाते मारे भी गए हैं और पकड़े भी गए हैं। कई संगठनों ने इस पर पाबंदी लगाने की बात भी कही है। विख्यात सामाजिक कार्यकर्ता तिस्ता शितलवाड ने इस मामले को अपने मैगजीन में उठाया है।

कम्यूनल कम्बैट ने एक विशेष अंक में हिंदू आतंकवाद के बढ़ते हुए नेटवर्क पर एक विशेष विश्लेषण पेश किया है जिसमें कहा गया है कि सीबीआई ने हिंदू दहशतगर्दी पर पर्दा डालने की कोशिश की है। अप्रैल, 2006 में नादेड में हुए बम धमाकों के बारे में सीबीआई ने अदालत में जो चार्जशीट पेश की थी वह एक पक्षीय थी। 28 अगस्त, 2008 को दिल्ली में आयोजित एक जनसभा में वीएचपी और बजरंग दल पर पाबंदी लगाने की मांग की गई। इसी तरह की मांग 1999 और 2000 के दौरान जज बी.जे. कोशले पाटिल, फिल्म निर्माता महेश भट्ट और गुजरात के पूर्व पुलिस अधिकारी बी. श्रीकुमार भी करते रहे हैं। इस बैठक से चार दिन पूर्व कानपुर में हुए एक धमाके में बजरंग दल के दो कार्यकर्ता बम बनाते हुए मारे गए थे। उड़ीसा में ईसाई हिंदू उग्रवाद का शिकार हुए हैं। इसके लिए संघ परिवार के यही संगठन दोषी हैं। हिंदू जन जागरण समिति, सनातन संस्था, गुरुकृपा प्रतिष्ठान जम्मू में सक्रिय हैं और उन्होंने अमरनाथ यात्रा संघ समिति की आड़ में जम्मू कश्मीर में सांप्रदायिकता भड़काई है। हैरानी की बात है कि मीडिया ने इसे कोई महत्व नहीं दिया। सीबीआई की ओर से हिंदू उग्रवादियों को कवर अप करने का जो प्रयास हो रहा है। उसकी हकीकत को भी जानना जरूरी है। इस बैठक में इस बात पर चिंता प्रकट की गई कि क्राइम ब्रांच, एटीएस और अन्य सुरक्षा एजेंसियां तथाकथित हिंदू संगठनों के आतंकवाद को नजरअंदाज कर रही हैं। इस बैठक में देश में होने वाले बम धमाकों की जांच के लिए एक विशेष ट्रिब्यूनल बनाने की भी मांग की गई जिसमें सुर्पीम कोर्ट के तीन जज शामिल किए जाएं। इस बैठक में यह आरोप लगाया गया कि हिंदू उग्रवादी संगठन मुसलमानों को बदनाम कर रहे हैं और इस संबंध में सुरक्षा एजेंसियों का रूख भी खेदजनक है। हिंदुस्तानी सरकार, नेता और मीडिया इसे जानबूझकर सही ढंग से पेश नहीं कर रहा है। इससे हिंदू उग्रवाद को बढ़ावा मिल रहा है और नरेन्द्र मोदी जैसे लोग उभर रहे हैं। मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने बीएचपी और बजरंग दल पर पाबंदी लगाने की मांग की। उन्होंने गुजरात में हुए कत्लेआम का उल्लेख करते हुए संघ परिवार पर पाबंदी लगाने पर भी जोर दिया। हैरानी की बात है कि कांग्रेस तब से लेकर अब तक इस मामले में मौन धारण किए हुए है।

(पृः 597)

उड़ीसा में ईसाई हिंदू उग्रवाद का शिकार हुए हैं। इसके लिए संघ परिवार के यही संगठन दोषी हैं। हिंदू जन जागरण समिति, सनातन संस्था, गुरुकृपा प्रतिष्ठान जम्मू में सक्रिय हैं और उन्होंने अमरनाथ यात्रा संघ समिति की आड़ में जम्मू कश्मीर में सांप्रदायिकता भड़काई है। हैरानी की बात है कि मीडिया ने इसे कोई महत्व नहीं दिया।

साजिश बहुत गहरी है फिरकापरस्तों की

असम में हुए बम धमाकों का शक हमारी फौज को बांग्लादेश के आतंकवादी संगठन हूजी पर है। और यही शक भारतीय जनता पार्टी के प्रमुख लालकृष्ण आडवाणी को भी है। कितनी मिलती जुलती है दोनों की सोच। जबकि असम सरकार इनमें उल्फा का हाथ देख रही है। लेकिन आडवाणी जैसे लोगों को किसी न किसी बहाने मुसलमानों का हाथ देखने की आदत ही पड़ गई है। पहले यह सिलसिला सिर्फ सांप्रदायिक ताकतों तक ही सीमित था। मगर अब फौज का दृष्टिकोण भी बदलने लगा है। कही ऐसा तो नहीं कि लेफ्टिनेंट कर्नल पुरोहित और मेजर उपाध्याय जैसे और लोग फौज में मौजूद हैं। हम बजरंग दल पर रोशनी डाल रहे हैं। सीपीएम के एमपी. हनान मुल्ला ने प्रधानमंत्री को खत लिखकर बजरंग दल पर कार्रवाई करने की मांग की। मीडिया ने हिंदू आतंकवाद की कवरेज आमतौर पर नहीं की। हालांकि हिंदू आतंकवाद बड़ी तेजी से सिर उठा रहा है। मगर इसके बावजूद इन बम धमाकों पर खामोशी अख्तियार की गई जिनमें हिंदू संगठनों का हाथ था। विपक्ष और सत्तारूढ़ पार्टियां भी इस मामले पर एक नजर आ रही हैं।

क्या इसके पीछे कोई साजिश है? आउटलुक ने अपनी विशेष रिपोर्ट में इस बात पर जोर दिया है कि पॉलिसी बनाने वाले सत्तारूढ़ लोग पुलिस और पत्रकारों ने इस बात पर सहमति कर दी है कि अगर हिंदू उग्रवादियों को मुस्लिम उग्रवादियों की तरह निशाना बनाया गया तो सामाजिक संतुलन बिगड़ सकता है। मैग्जीन ने बीएचपी की वेबसाइट का हवाला दिया है कि बजरंग दल खुद को हिंदू समाज के रक्षक के रूप में पेश कर रहा है। आउटलुक ने जम्मू क्षेत्र में बजरंग दल की गतिविधियों की जांच की है। बजरंग दल के अखिल भारतीय सचिव सुरेंद्र जैन का कहना है कि उनका संगठन गत चार वर्षों से जम्मू के ग्रामीण क्षेत्र में सक्रिय है। इस संगठन में डिफेंस कमेटियां बनाई हैं। मगर अब इस संगठन ने बमों के धमाके करके उग्रवाद की ज्वाला भड़कानी शुरू कर दी है। कानपुर में 24 अगस्त को बम बनाते हुए बजरंग दल के दो वर्कर मारे गए हैं। कम्यूनल कम्बैट ने 1999 से बजरंग दल पर पाबंदी लगाने की मांग शुरू की थी। संघ परिवार ने समाज को सशस्त्र बनाने का काम शुरू किया है। नवजवानों और औरतों में त्रिशुल बांटे जा रहे हैं। 2003 से बजरंग दल को

लेकिन आडवाणी जैसे लोगों को किसी न किसी बहाने मुसलमानों का हाथ देखने की आदत ही पड़ गई है। पहले यह सिलसिला सिर्फ सांप्रदायिक ताकतों तक ही सीमित था। मगर अब फौज का दृष्टिकोण भी बदलने लगा है।

कम्यूनल कम्बैट ने 1999 से बजरंग दल पर पाबंदी लगाने की मांग शुरू की थी। संघ परिवार ने समाज को सशस्त्र बनाने का काम शुरू किया है। नवजवानों और औरतों में त्रिशुल बांटे जा रहे हैं। 2003 से बजरंग दल को वीएचपी और आरएसएस का समर्थन प्राप्त है। उन्हें यह प्रशिक्षण दिया जा रहा है कि किस तरह से बम बनाए जाएं और कैसे धमाके किए जाएं। एक पुलिस अधिकारी के अनुसार गुजरात के कत्लेआम में उन्होंने 2500 मुसलमानों की हत्या की थी। देश में 600 बम धमाके हुए जो हिंदू संगठनों ने किए।

वीएचपी और आरएसएस का समर्थन प्राप्त है। उन्हें यह प्रशिक्षण दिया जा रहा है कि किस तरह से बम बनाए जाएं और कैसे धमाके किए जाएं। एक पुलिस अधिकारी के अनुसार गुजरात के कत्लेआम में उन्होंने 2500 मुसलमानों की हत्या की थी। देश में 600 बम धमाके हुए जो हिंदू संगठनों ने किए।

इसाईयों पर हुए हाल के हमलों को अलग–थलग नहीं किया जा सकता। बजरंग दल की गतिविधियां खतरनाक ढंग से बढ़ रही है और वह बम बनाने में सबसे आगे है। उड़ीसा कर्नाटक और देश के दीगर हिस्सों में चर्चों पर हो रहे हमलों में बजरंग दल का हाथ है। उसे वीएचपी और संघ परिवार के अन्य संगठनों की भी सहायता प्राप्त है। हाल में उन्होंने महाराष्ट्र की कई मस्जिदों में बम फिट किए थे। बजरंग दल के पास नेटवर्क मौजूद है। देश के कई भागों में बजरंग दल मॉब वाइलेंस को भड़का रहा है। जांच एजेंसियों ने यह माना है कि कानपुर और नांदेड़ में हुए बम धमाकों में बजरंग दल का हाथ है। इसके अलावा 2003 में उन्होंने तीन मस्जिदों पर भी बम फेके थे। बजरंग दल बम बनाने में अमोनियम नाइट्रेड का इस्तेमाल कर रहा है। संभव है कि 2006 में जामा मस्जिद दिल्ली के बम धमाके में भी यह शामिल हो। उड़ीसा में चर्चों पर हमले और ईसाईयों के खिलाफ की गई हिंसक गतिविधियों मं बजरंग दल के बीस हजार कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया जिनका संबंध मिडिल क्लास या लोवर मिडिल क्लास से था। पूने जैसे शहरों में इसकी फौज मौजूद है। सरकारी तौर पर बजरंग दल वीएचपी का युवा विंग है। पुना के कोऑर्डिनेटर विनीत महाजन के अनुसार तमाम बड़े निर्णय बीएचपी और बजरंग दल एक साथ लेती है। उन्होंने कहा कि उनका ग्रुप सेवा, सुरक्षा और संस्कार पर कार्य करता है।

वीएचपी के उत्तर प्रदेश यूनिट के एक व्यक्ति ने कहा कि वीएचपी ने हिंदू धर्म से संबंधित कई मामलों में नाता तोड़ लिया है। इनमें गोवध का प्रतिबंध और राम मंदिर का निर्माण शामिल है। इसे बजरंग दल कि हवाले कर दिया है। झांसी के एक गांव में बजरंग दल के एक जलसे में माईक पर उत्तेजित नारे लगाए जाते रहे और बजरंगी बंदूके और तलवारे हवा में लहराते रहे। उत्तर प्रदेश पुलिस के अनुसार बीजेपी के एमपी योगी आदित्य नाथ की रहनुमाई में हिंदू युवा वाणी पूर्वी उत्तर प्रदेश में सांप्रदायिकता भड़का रही है। आजमगढ़ में योगी की कार पर हमले की आड लेकर मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में दहशत फैलाई गई। जनवरी, 2008 में पूर्वी उत्तर प्रदेश के मऊ जिला में हिंदू युवा वाणी और हिंदू महासभा आतंकवाद में लिप्त पाया गया। जनवरी, 2008 में तनकाशी, तमिलनाडू में आरएसएस के दफ्तर में हुए बम के धमाके में हिंदू मुनानी के दो कार्यकर्ता मारे गए। 30 अगस्त को वीएचपी के सीनियर लीडर रामविलास वैदांती ने अयोध्या पुलिस में यह शिकायत दर्ज कराई कि उन्हें सिमी और अलकायदा ने जान से मारने की धमकी दी है। जब पुलिस ने उनका टेलीफोन निगरानी में रखा तो यह पता चला कि उनको धमकी देने वाले उन्ही के समर्थक थे। यह नौटंकी इसलिए की गई ताकि उन्हें जेड प्लस की सुरक्षा मिल सके।

(पृ: 584)

मुकदमें की यह आग हम तक भी पहुंचेगी यह उम्मीद न थी

आडवाणी का यह दावा है कि आरएसएस हिंसा में विश्वास नहीं रखता। खुद मिस्टर आडवाणी आरएसएस से लम्बे समय तक जुड़े रहे हैं, यह बात उनसे बेहतर कौन जान सकता है कि शुरू शुरू में आरएसएस का उद्देश्य मुसलमान दंगाईयों के खिलाफ हिंदूओं को प्रशिक्षण देना था और आरएसएस की तमाम शाखाओं में लाठी चलाने का प्रशिक्षण दिया जाता था। इसके बाद इसने हथियारों के प्रशिक्षण देने के लिए दूसरे संगठन भी बनाए। यहां तक की दूर्गा वाहिनी भी अपनी महिलाओं को बंदूक चलाने का प्रशिक्षण देती है। मिस्टर आडवाणी यह बात भी अच्छी तरह जानते होंगे कि आरएसएस हिटलर को बहुत इज्जत और सम्मान देती है। वैसे भी आजकल राजस्थान और गुजरात जैसे बीजेपी के शासन वाले राज्यों में हिटलर और नाजीइज्म को पसंद की नजर से देखा जाता है। हिटलर ने समस्याओं के समाधान के लिए कभी भी शांति पूर्ण रास्तों को नहीं चुना। यह दावा करना कि हिंदू संगठन हिंसा में विश्वास नहीं रखते गोया यह कहना है कि आग जलाती नहीं बल्कि इलाज करती है। हर कोई यह जानता है कि बीएचपी और बजरंग दल ने गुजरात में क्या किया है? 2002 में गुजरात के दंगे भड़काने वाला वीएचपी का ही कैडर था। जिन्होंने बीजेपी के लीडरों के साथ मिलकर 2000 मुसलमानों को बड़ी बेरहमी से कत्ल किया। या दूसरों को उन्हें कत्ल करने के लिए उकसाया क्या यह हिंसा नहीं थी?

(पृः 589)

हर कोई यह जानता है कि बीएचपी और बजरंग दल ने गुजरात में क्या किया है? 2002 में गुजरात के दंगे भड़काने वाला वीएचपी का ही कैडर था। जिन्होंने बीजेपी के लीडरों के साथ मिलकर 2000 मुसलमानों को बड़ी बेरहमी से कत्ल किया। या दूसरों को उन्हें कत्ल करने के लिए उकसाया क्या यह हिंसा नहीं थी?

पुरोहित है मास्टर माइंड, मालेगांव धमाकों और इंडियन मुजाहिद्दीन का

जब मैं आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री वाइ. एस. राजशेखर रेड्डी से मिला तो मैने मांग की कि मक्का मस्जिद, लुम्बिनी पार्क एवं गोकुल चाट भंडार में हुए बम धमाकों की फाइलें फिर से खोली जानी चाहिए। क्योंकि हाल में ही जो रहस्योदघाटन हुए हैं उनसे साफ जाहिर है कि असली मुजरिम कोई और है जबकि शक के आधार पर पुलिस मुसलमानों को गिरफ्तार करती रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सीबीआई जांच कर रही है। हमारी मांग यह है कि हिंदू सांप्रदायिक संगठनों को भी जांच के दायरे में रखा जाए। रक्षा मंत्री ए.के. एंटोनी ने आतंकवाद के मामले में सैनिक अधिकारियों के लिप्त होने पर गहरी चिंता व्यक्त की है। हम चुनाव आयोग से यह कहना चाहेंगे कि एटीएस जिस तरह से जांच कर रही है और जो तथ्य सामने आ रहे हैं उनको देखते हुए उस राजनीतिक दल की भूमिका पर भी विचार होनी चाहिए जिसके साए में ये उग्रवादी संगठन फल–फूल रहे हैं। जिस तरह से बाबरी मस्जिद की शहादत में भारतीय जनता पार्टी की भूमिका को महसूस करते हुए उन सभी सरकारों को बर्खास्त किया गया था जो कि भाजपा की थीं। इसी तरह से अगर भाजपा का इन हिंदू उग्रवादी पार्टियों से रिश्ता साबित होता है तो भाजपा के चुनाव में भाग लेने पर पाबंदी लगाने पर विचार किया जाना चाहिए।

हमें संतोष है कि मुंबई पुलिस और एटीएस ने हिंदू जन जागरण समिति और सनातन संस्था के

जिस तरह से बाबरी मस्जिद की शहादत में भारतीय जनता पार्टी की भूमिका को महसूस करते हुए उन सभी सरकारों को बर्खास्त किया गया था जो कि भाजपा की थीं। इसी तरह से अगर भाजपा का इन हिंदू उग्रवादी पार्टियों से रिश्ता साबित होता है तो भाजपा के चुनाव में भाग लेने पर पाबंदी लगाने पर विचार किया जाना चाहिए।

साध्वी के एनजीओ को नरेन्द्र मोदी आर्थिक सहायता प्रदान कर रहे थे। इसी कारण मध्य प्रदेश का एक गरीब परिवार सूरत आकर मालदार बन गया। पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने इसके बारे में जांच करवाने की भी मांग की है। नरेन्द्र मोदी के आर्थिक सहयोग के बदले में प्रज्ञा ठाकुर ने नरेन्द्र मोदी के चुनाव अभियान में भी भाग लिया था।

खिलाफ अपनी जांच में तेजी ला दी है। इन संगठनों के लोग पनवेल, नवीं मुंबई और थाने बम कांड में लिप्त पाए गए हैं। अनुमान यह है कि पुलिस इन संगठनों पर पाबंदी लगाने के लिए सामग्री जुटा रही है या मालेगांव बम धमाकों में संलिप्त अभिनव भारत और हिंदू जनजागरण समिति व सनातन संस्था के बीच संपर्क के बारे में कुछ सुराख मिले हैं जिनकी जांच हो रही है। साध्वी प्रज्ञा की गिरफ्तारी के बाद सनातन संस्था के दो कार्यकर्ताओं को एटीएस ने पकड़ा था और उनसे कई पूछताछ करने के बाद उन्हें छोड़ दिया था। पुलिस सनातन संस्था की नीतियों, गतिविधियों और उनसे संबंधित कुछ लोगों के बारे में व्यापक रूप से जांच कर रही है। सनातन संस्था की जितने दफ्तर महाराष्ट्र में हैं उनकी तलाशी ली गई है और उसके मंदिरों की भी निगरानी की जा रही है। हिंदू जागरण समिति और सनातन संस्था के दैनिक पत्र सनातन प्रभात के बारे में भी जांच हो रही है।

साध्वी के एनजीओ को नरेन्द्र मोदी आर्थिक सहायता प्रदान कर रहे थे। इसी कारण मध्य प्रदेश का एक गरीब परिवार सूरत आकर मालदार बन गया। पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने इसके बारे में जांच करवाने की भी मांग की है। नरेन्द्र मोदी के आर्थिक सहयोग के बदले में प्रज्ञा ठाकुर ने नरेन्द्र मोदी के चुनाव अभियान में भी भाग लिया था। दिग्विजय सिंह ने कहा था कि अहमदाबाद बम धमाकों के बाद सूरत में जो 28 बम मिले थे और दो कारें बारूद से भरी हुई पकड़ी गईं थीं उनमें साध्वी प्रज्ञा ठाकुर की कोई भूमिका थी या नहीं, इसकी जांच होनी चाहिए। नाथूराम गोडसे से लेकर साध्वी प्रज्ञा ठाकुर तक हिंसा ही आरएसएस के कल्चर का हिस्सा रहा है और आरएसएस से जुड़े हुए 100 संगठन हिंसा की गतिविधियों में भाग ले रहे हैं। नाथूराम गोडसे के द्वारा महात्मा गांधी की हत्या आतंकवाद की पहली घटना थी जिसकी पैदाइश आरएसएस के नजरिये से हुई और हाल के आतंकवादी घटनाओं में भी आरएसएस की फिलॉस्फी ही शामिल है। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह का यह भी कहना है कि जब भी बीजेपी मुसीबत या परेशानी में घिर जाती है तभी बमों के धमाके होते हैं। पुरोहित ने कम से कम 15 एसएमएस उपाध्याय को भेजे। एटीएस ने यह भी दावा किया है कि इस बात के पुख्ता सबूत हैं कि कर्नल पुरोहित ने साध्वी प्रज्ञा ठाकुर और एक फरार आरोपी रामजी नारायण सिंह के साथ एक गुप्त बैठक में भाग लिया था जो कि 16 सितंबर को भौंसले मिलिट्री स्कूल नासिक में हुई थी। साध्वी और रामजी के बीच हुई टेलीफोन वार्ता से साफ है कि इनके रिश्ते मालेगांव में हुए धमाकों से थे।

(पृः 606)

संभव है कि कर्नल पुरोहित के अरबी सीखने का उद्देश्य पुलिस और गुप्तचर संगठनों को गुमराह करना था। वे किसी मुस्लिम नाम से सिमकार्ड खरीदते। किसी इस्लामी संगठन का हवाला देते और जो टेप जारी करते वह ऐसी उर्दू का होता जिसमें अरबी शामिल होती तो हर व्यक्ति यह समझ लेता कि मुसलमान संगठनों का इन धमाकों से गहरा रिश्ता है और जिसके तार अरब देशों से जुड़े हुए हैं। देश की पुलिस की मानसिकता भी मुस्लिम विरोधी है, और इस्लाम और मुसलमानों के खिलाफ एक सुनियोजित साजिश चल रही है ताकि उन्हें दुनिया में बदनाम किया जाए।

Section II

Give a Dog a Bad Name and Hang him

Sinister Propaganda against Intelligence Bureau(IB) with a communal design

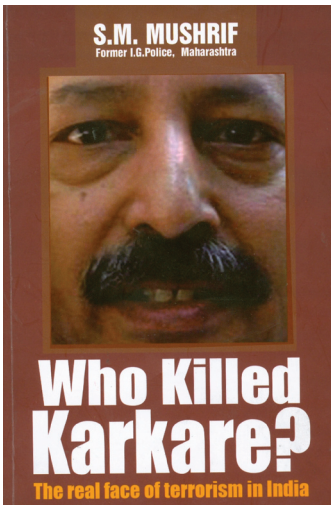

Book profile

Name of Book: Who Killed Karkare?

Publishers: Pharos Media and Publishing Pvt Ltd

D-84 Abul Fazl Enclave-I

Jamia Nagar, New Delhi-110025

First Edition: 2009

Revised Edition: 2009

Price: 300

Number of Pages: 320

About the Author (as given in the book)

Former senior police officer (Maharashtra Govt)

KEY POINTS:

Denigration of India's Intelligence Bureau/ Police

1. "From the very beginning Brahmin started infiltrating into the organization and, within ten years of independence acquired near full control over the IB."(p19)
2. 'The Brahmin-dominated Indian intelligence agency' (p199)
3. "The IB had, thus, taken over by the RSS, it set out to implement the RSS agenda very meticulously as if it was an organ of RSS." (P20)
4. "The IB has, thus, gradually assumed the role of the real crusader of Brahminism"(p21)
5. "Intention of IB and RAW in engineering such "attacks" or "encounters" is only to create ill feeling among common Hindus against the Muslim community"(P40)

Big Lie

Mushrif made a serious allegation that IB was under the grip of the RSS. His allegation damages the reputation of both the RSS and IB. Is there any grain of truth in his allegation? Following facts unravel the truth:

Former Inspector General of Police, Maharashtra, S M Mushrif first publicly made this sensational statement in New Delhi at a three-day workshop in March 2007 on the subject, "Trends in Intelligence and Law and Order agencies" under the aegis of **Mumbai's Citizen for Justice and Peace.**[1] " Mushrif exploded the lie that the RSS has penetrated the IB to the extent that it is working as an RSS wing. He 'substantiated' his allegation by stating, "B G Vaidya , brother of RSS leader , MG Vaidya , an IPS spent his entire career in the IB." He further stated that "it was the reason that the IB always shielded the RSS." BG Vaidya, a retired IPS, who lives in Poona, has no relation with the former RSS spokesperson, MG Vaidya, whose younger brother, the late BG Vaidya, was a bank employee in Amraovati (Maharashtra) and died in 2003[2]. This was repeated by Muslim journals and intellectuals. For instance, Syed Shahabuddin-edited journal "Muslim India" reproduced his statement without probing the fact. Milli Gazette[3] too prominently wrote the same story. The unchecked and uninterrupted propaganda damages institutions, misguides media and public and also encourages such elements to continue with the similar constructed stories. Mushrif's work "Who Killed Karkare?" is its classical example. He repeated the lie in his work in a more assertive manner.[4]

1. controlled by Teesta Setalvad and Javed Anand (editors and publishers of *Communalism Combat*)
2. It's Hindu anger not terror, Rakesh Sinha The Pioneer, November 1, 2008
3. Milli Gazette, 1-15 April, 2007, V G Vaidya from Maharashtra remained in IB till his retirement and reached the highest post of DIB and, interestingly, when he was the IB chief, his real brother M G Vaidya was RSS chief of Maharashtra state." See Who Killed Karkare? P 20

On 26/11 (Mumbai terrorist attack):

- "there is no reason to suspect that Ajmal Kasab was arrested by Nepalese forces and was handed over to Indian intelligence agencies…sounds quite logical. (PP198-199)
- Mushrif's imagination and sympathy for Kasab about goes to the extent that he unhesitatingly writes "as the terrorist was already in the custody of IB, his photograph could have been taken either before or after the incident." (P201)
- IB behind conspiracy and preparation to kill Hemant Karkare. (PP 220-223)
- CIA could not be fully controlled by Zionists…as Brahmins could not fully control IB and RAW. (P239)
- Brahmins have been hankering for Peshwa. (P267)
- Out of 48 incidents connected with the terrorism
- As detailed in chapter II of this book , as many 35 pertain to Maharashtra…a detailed enquiry into them would reveal that the Brahmins have been their masterminds. (P270)
- The IB connive at the assassination of the Father of the Nation by willfully omitting to take action against conspirators.. (P276)
- Under the pretext of "intelligence", the IB intentionally spreads rumours of anticipated "attacks" by Muslim terrorist outfits on VVIPs, vital installations and religious places, with a view to create an anti-Muslim atmosphere in the country.. (P277)
- Some of the so called "terrorist attacks", wherein all the terrorist were killed , as in the casr of Parliament or RSS headquarters in Nagpur, were suspected to be handiwork of the IB..such cases should be inquired into by fact-finding committees. (P290)
- Unless media is taken out of the Brahmins' control, there is hardly anything which the government and judiciary can do. (P294)
- TV channels knowingly promote the Brahminist ideology, demonise Muslims, foment communal trouble… (P295)
- Kasab's following photograph taken either before or after incident by IB (P201)

4. V G Vaidya from Maharashtra remained in IB till his retirement and reached the highest post of DIB and, interestingly, when he was the IB chief , his real brother M G Vaidya was RSS chief of Maharashtra state." See Who Killed Karkare? P 20